सत्यमेव जयते

भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CULTURE
NATIONAL MONUMENTS AUTHORITY

“1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश” के लिए धरोहर उप-विधि

Heritage Bye-Laws for

The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 A.D. to 1079 A.D, Malakpura, Tehsil and District – Mahoba, Uttar Pradesh

“1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश” के लिए धरोहर उप-विधि

Heritage Bye-Laws for The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 A.D. to 1079 A.D, Malakpura, Tehsil and District – Mahoba, Uttar Pradesh

विषय – सूची

	अध्याय I **प्रारंभिक**	
1.1	संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ	1-2
1.2	परिभाषाएं	2-4
	अध्याय II **प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (एएमएएसआर) अधिनियम,1958, यथा संशोधित, की पृष्ठभूमि**	
2.1	अधिनियम की पृष्ठभूमि	5
2.2	धरोहर उप-विधियों से संबंधित अधिनियम के उपबंध	5
2.3	आवेदक के अधिकार और जिम्मेदारियां	5-6
	अध्याय III **संरक्षित स्थल – 1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश का स्थान और अवस्थिति**	
3.1	संरक्षित स्थल का स्थान एवं अवस्थिति	7-8
3.2	संरक्षित स्थल की संरक्षित सीमा	9
	3.2.1 एएसआई रिकॉर्ड के अनुसार अधिसूचना मानचित्र/योजना	9
3.3	संरक्षित स्थल का इतिहास	9
3.4	संरक्षित स्थल का विवरण (वास्तुशिल्प विशेषताएं, तत्व, सामग्री आदि)	9
3.5	वर्तमान स्थिति	9
	3.5.1 संरक्षित स्थल की स्थिति- स्थिति का आकलन	9
	3.5.2 प्रतिदिन आने वाले लोगों की संख्या और कभी-कभी एकत्रित होने वाले लोगों की संख्या	9
	अध्याय IV **स्थानीय क्षेत्र विकास योजनाओं में विद्यमान क्षेत्रीकरण, यदि कोई हो**	
4.1	विद्यमान क्षेत्रीकरण	10
4.2	स्थानीय निकायों के मौजूदा दिशा-निर्देश	10
	अध्याय V **प्रथम अनुसूची एवं कुल स्टेशन सर्वेक्षण के अनुसार सूचना**	
5.1	सर्वेक्षण योजना	11
5.2	सर्वेक्षित आंकड़ो का विश्लेषण	11
	5.2.1 प्रतिषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र का विवरण	11

	5.2.2 निर्मित क्षेत्र का विवरण	11-12
	5.2.3 हरित/खुले स्थानों का विवरण	12
	5.2.4 परिसंचरण के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र - सड़कें, फुटपाथ, आदि	13
	5.2.5 भवनों की मौजूदा ऊंचाई	13
	5.2.6 राज्य संरक्षित स्थल और सूचीबद्ध धरोहर भवन	13
	5.2.7 सार्वजनिक सुविधाएं	13
	5.2.8 संरक्षित स्थल तक जाने की सुगमता	13
	5.2.9 अवसरंचनात्मक सेवाएं	13
	5.2.10 स्थानीय निकायों के दिशानिर्देशों के अनुसार क्षेत्र का प्रस्तावित ज़ोनिंग	13
अध्याय VI स्थल का वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व		
6.1	वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व	14
6.2	संरक्षित स्थल की संवेदनशीलता	14
6.3	संरक्षित स्थल या क्षेत्र से दृश्यता और विनियमित क्षेत्र से दृश्यता	14-15
6.4	पहचान किया जाने वाला भूमि उपयोग	15
6.5	संरक्षित स्थल के अलावा अन्य पुरातात्विक धरोहर अवशेष	15
6.6	सांस्कृतिक परिदृश्य	15
6.7	महत्वपूर्ण प्राकृतिक भू-दृश्य	15-16
6.8	खुले स्थान और भवनों का उपयोग	16
6.9	पारंपरिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गतिविधियां	16
6.10	संरक्षित स्थल और विनियमित क्षेत्रों से दिखाई देने वाला क्षितिज	16
6.11	पारंपरिक वास्तुकला	17
6.12	स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा यथा उपलब्ध विकास योजना	17
6.13	भवन संबंधी मानदंड	17
	6.13.1 मरम्मत एवं नवीनीकरण (प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र में)	17
	6.13.2 पुनर्निर्माण	18
	6.13.3 नया निर्माण	18-20
6.14	आगंतुक सुविधाएं और साधन	20
अध्याय VII कार्य-स्थल विशिष्ट संस्तुतियां		
7.1	कार्य-स्थल विशिष्ट संस्तुतियां	21
7.2	अन्य सिफ़ारिशें	21

CONTENTS

CHAPTER I Preliminary		
1.1	Short title, Extent and Commencements	22
1.2	Definitions	23-24
CHAPTER II Background of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act, 1958, as amended		
2.1	Background of The Act	25
2.2	Provisions of the Act related to Heritage Bye-Laws	25
2.3	Rights and Responsibilities of the Applicant	25-26
CHAPTER III Location and Setting of the Protected Site – The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 A.D. to 1079 A.D, Malakpura, Tehsil and District – Mahoba, Uttar Pradesh		
3.1	Location and Setting of the Protected Site	27-28
3.2	Protected boundary of the Site	28-29
	3.2.1 Notification Map/ Plan as per ASI records	29
3.3	History of the Protected Site	29
3.4	Description of Protected Site (architectural features, elements, materials etc.)	29
3.5	Current Status	29
	3.5.1 Condition of the Protected Site- condition assessment	29
	3.5.2 Daily footfalls and occasional gathering numbers	29
CHAPTER IV Existing Zoning, if any, in the Local Area Development Plans		
4.1	Existing Zoning	30
4.2	Existing Guidelines of the local bodies	30
CHAPTER V Information as per First Schedule and Total Station Survey		
5.1	Survey Plan	31
5.2	Analysis of surveyed data	31
	5.2.1 Prohibited Area and Regulated Area details	31
	5.2.2 Description of built up area	31-32
	5.2.3 Description of green/open spaces	32
	5.2.4 Area covered under circulation- roads, footpaths etc	32

	5.2.5 Existing Heights of buildings (Zone wise)	32-33
	5.2.6 State Protected Sites and listed Heritage Buildings	33
	5.2.7 Public Amenities	33
	5.2.8 Access to Protected Site	33
	5.2.9 Infrastructure services	33
	5.2.10 Proposed zoning of the area as per Local Bodies	33
CHAPTER VI Architectural, Historical and Archaeological Value of the Site		
6.1	Architectural, historical and archaeological value	34
6.2	Sensitivity of the Protected Site	34
6.3	Visibility from the Protected Site or area and visibility from Regulated Area	34-35
6.4	Land-use to be identified	35
6.5	Archaeological heritage remains other than protected site	35
6.6	Cultural landscapes	35
6.7	Significant natural landscapes	36
6.8	Usage of open space and constructions	36
6.9	Traditional, historical and cultural activities	36
6.10	Skyline as visible from the Protected Site and from Regulated Areas	36
6.11	Traditional architecture	36
6.12	Developmental plan as available by the local authorities	37
6.13	Building related parameters	37
	6.13.1 Repair and Renovation (in Prohibited and Regulated Area)	37
	6.13.2 Reconstruction	37-38
	6.13.3 New Construction	38-39
6.14	Visitors facilities and amenities	39
CHAPTER VII Site Specific Recommendations		
7.1	Site Specific Recommendations	40
7.2	Other Recommendations	40

Annexure		
अनुलग्नक-I Annexure-I	1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश की संरक्षित, प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों की संरक्षित सीमा The Protected Boundary of Protected, Prohibited and Regulated Areas of The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 A.D. to 1079 A.D, Malakpura, Tehsil and District – Mahoba, Uttar Pradesh	41
अनुलग्नक-II Annexure-II	1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश की अधिसूचना Notification of The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 A.D. to 1079 A.D, Malakpura, Tehsil and District – Mahoba, Uttar Pradesh	42-44
अनुलग्नक–III Annexure–III	1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश की रूपरेखा योजना Contour Plan of The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 A.D. to 1079 A.D, Malakpura, Tehsil and District – Mahoba, Uttar Pradesh	45
अनुलग्नक–IV Annexure–IV	संरक्षित स्थल और उसके आस-पास के क्षेत्र के चित्र Images of the Protected Site and its Surroundings	46-57

भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (धरोहर उप-विधि विनिर्माण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम 2011 के नियम (22) के साथ पठित प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ङ द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, संरक्षित स्थल **"1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश"** के लिए निम्नलिखित धरोहर उप-विधि जिन्हें भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (बीएचयू), वाराणसी के परामर्श से सक्षम प्राधिकारी द्वारा तैयार किया गया है, को राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (प्राधिकरण के अध्यक्ष और सदस्यों की सेवा शर्तें और कार्य प्रणाली), नियम, 2011 के नियम 18 के उप नियम 2 द्वारा यथा अपेक्षित जनता से आपत्ति या सुझाव आमंत्रित करने के लिए एतद्वारा 31.07.2024 को प्रकाशित किया गया था।

यथा विनिर्दिष्ट दिनांक से पहले प्राप्त आपत्ति/सुझावों पर सक्षम प्राधिकारी के परामर्श से राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण द्वारा विधिवत विचार किया गया है।

इसलिए, अब प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ङ की उप-धारा (5) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण, निम्नलिखित उप-विधि बनाता है, नामत:

"1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश" के लिए धरोहर उप-विधि

अध्याय I
प्रारंभिक

1.1 संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ:-

(i) इन उप-विधियों को संरक्षित स्थल **1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश** के लिए राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण धरोहर उप-विधि, 2025 कहा जाएगा।

(ii) ये संस्मारक/स्थल के सम्पूर्ण प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र तक लागू होंगी।

(iii) इन उप-विधियों के प्रावधान किसी भी अन्य उप-विधि में निहित असंगतता के बावजूद प्रभावी होंगे, चाहे इन उप-विधियों के प्रारंभ होने से पहले या बाद में बनाए गए हों, या किसी उप-विधि के आधार पर प्रभावी होने वाले किसी भी दस्तावेज़ में हों। इन उप-

विधियों को किसी अन्य उप-विधि के अनुरूप बनाने के लिए इनमें संशोधन करना अनिवार्य नहीं होगा।

(iv)ये अधिकारिक राजपत्र में उनके प्रकाशन की तिथि से प्रवृत्त होंगी।

1.2 परिभाषाएं:-

1. इन उप-विधियों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो, अधिनियम अथवा इसके तहत बनाए गए नियमों के तहत दिए अनुसार परिभाषाएं सुविधा की दृष्टि से यहां पुन: लिखी गई हैं:-

(क) "प्राचीन संस्मारक" से कोई संरचना, रचना या संस्मारक, या कोई स्तूप या स्थान या दफ़नगाह या कोई गुफा, शैल-मूर्ति, शिला-लेख या एकाश्मक जो ऐतिहासिक, पुरातत्वीय या कलात्मक रुचि का है और जो कम से कम एक सौ वर्षों से विद्यमान है, अभिप्रेत है, और इसके अंतर्गत हैं-

(i) किसी प्राचीन संस्मारक के अवशेष,

(ii) किसी प्राचीन संस्मारक का स्थल,

(iii)किसी प्राचीन संस्मारक के स्थल से लगी हुई भूमि का ऐसा भाग जो ऐसे संस्मारक को बाड़ से घेरने या आच्छादित करने या अन्यथा परिरक्षित करने के लिए अपेक्षित हो, तथा

(iv)किसी प्राचीन संस्मारक तक पहुंचने और उसके सुविधाजनक निरीक्षण के साधन;

(ख) "पुरातत्वीय स्थल और अवशेष" से कोई ऐसा क्षेत्र अभिप्रेत है, जिसमें ऐतिहासिक या पुरातत्वीय महत्व के ऐसे भग्नावशेष या अवशेष हैं या जिनके होने का युक्तियुक्त रूप से विश्वास किया जाता है, जो कम से कम एक सौ वर्षों से विद्यमान है, और इनके अंतर्गत हैं-

(i) उस क्षेत्र से लगी हुई भूमि का ऐसा भाग जो उसे बाड़ से घेरने या आच्छादित करने या अन्यथा परिरक्षित करने के लिए अपेक्षित हो, तथा

(ii) उस क्षेत्र तक पहुंचने और उसके सुविधाजनक निरीक्षण के साधन;

(ग) "अधिनियम" से आशय प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, है;

(घ) "पुरातत्व अधिकारी" से भारत सरकार के पुरातत्व विभाग का कोई ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है, जो सहायक अधीक्षण पुरातत्वविद् से निम्नतर पद (श्रेणी) का नहीं है;

(ड.) ''प्राधिकरण'' से अधिनियम की धारा 20च के अधीन गठित राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण अभिप्रेत है;

(च) "सक्षम प्राधिकारी" से केंद्र सरकार या राज्य सरकार के पुरातत्व निदेशक या पुरातत्व आयुक्त की श्रेणी से नीचे न हो या समतुल्य श्रेणी का ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है, जो

इस अधिनियम के अधीन कृत्यों का पालन करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, सक्षम प्राधिकारी के रूप में विनिर्दिष्ट किया गया हो:

बशर्ते कि केंद्र सरकार सरकारी राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, धारा 20ग, 20घ और 20ङ के प्रयोजन के लिए भिन्न भिन्न सक्षम प्राधिकारी विनिर्दिष्ट कर सकेगी;

(छ) ''निर्माण'' से किसी संरचना या भवन का कोई परिनिर्माण अभिप्रेत है, जिसके अंतर्गत उसमें ऊर्ध्वाकार या क्षैतिजीय कोई परिवर्धन या विस्तारण भी है, किन्तु इसके अंतर्गत किसी विद्यमान संरचना या भवन का कोई पुन:निर्माण, मरम्मत और नवीकरण या नालियों और जलनिकास सुविधाओं तथा सार्वजनिक शौचालयों, मूत्रालयों और इसी प्रकार की सुविधाओं का निर्माण, अनुरक्षण और सफाई या जनता के लिए जलापूर्ति की व्यवस्था करने के लिए आशयित सुविधाओं का निर्माण और अनुरक्षण या जनता के लिए विद्युत की आपूर्ति और वितरण के लिए निर्माण या अनुरक्षण, विस्तारण, प्रबंध या जनता के लिये इसी प्रकार की सुविधाओं के लिए व्यवस्था शामिल नहीं हैं;

(ज) "सरकार" से आशय भारत सरकार से है;

(झ) अपने व्याकरणिक रूपों और सजातीय पदों सहित "अनुरक्षण" के अंतर्गत हैं किसी संरक्षित संस्मारक को बाड़ से घेरना, उसे आच्छादित करना, उसकी मरम्मत करना, उसका पुनरूद्धार करना और उसकी सफाई करना, और कोई ऐसा कार्य करना जो किसी संरक्षित संस्मारक के परिरक्षण या उस तक सुविधाजनक पहुंच को सुनिश्चित करने के प्रयोजन के लिए आवश्यक है;

(ञ) "स्वामी" के अंतर्गत हैं-

(i) संयुक्त स्वामी जिसमें अपनी ओर से तथा अन्य संयुक्त स्वामियों की ओर से प्रबंध करने की शक्तियॉ निहित हैं और किसी ऐसे स्वामी के हक-उत्तराधिकारी, तथा

(ii) प्रबंध करने की शक्तियों का प्रयोग करने वाला कोई प्रबंधक या न्यासी और ऐसे किसी प्रबंधक या न्यासी का पद में उत्तराधिकारी;

(ट) "विहित" से इस अधिनियम के अधीन बनाए गए नियम अभिप्रेत है:

(ठ) "प्रतिषिद्ध क्षेत्र" से धारा 20क के अधीन प्रतिषिद्ध क्षेत्र के रूप में विनिर्दिष्ट क्षेत्र या घोषित किया गया कोई क्षेत्र अभिप्रेत है;

(ड) "संरक्षित क्षेत्र" से कोई ऐसा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अभिप्रेत है, जिसे इस अधिनियम के द्वारा या उसके अधीन राष्ट्रीय महत्व का होना घोषित किया गया है;

(ढ) "संरक्षित संस्मारक" से कोई ऐसा प्राचीन संस्मारक अभिप्रेत है, जिसे इस अधिनियम के द्वारा या उसके अधीन राष्ट्रीय महत्व का होना घोषित किया गया है;

(ण) "विनियमित क्षेत्र" से धारा 20ख के अधीन विनिर्दिष्ट या घोषित किया गया कोई क्षेत्र अभिप्रेत है;

(त) "पुन:निर्माण" से किसी संरचना या भवन का उसकी पूर्व विद्यमान संरचना में ऐसा कोई परिनिर्माण अभिप्रेत है, जिसकी क्षैतिजीय और ऊर्ध्वाकार सीमाएं समान हैं;

(थ) "मरम्मत और पुनरुद्धार" से किसी पूर्व विद्यमान संरचना या भवन के परिवर्तन अभिप्रेत हैं, किन्तु इसके अंतर्गत निर्माण या पुन:निर्माण नहीं होंगे।

2. इसमें प्रयुक्त और परिभाषित नहीं किए गए शब्दों और अभिव्यक्तियों का आशय वही अर्थ होगा जैसा अधिनियम अथवा इसके तहत बनाए गए नियमों में समनुदेशित किया गया है।

अध्याय II

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (एएमएएसआर) अधिनियम,1958, यथा संशोधित, की पृष्ठभूमि

2.1 अधिनियम की पृष्ठभूमि:

धरोहर उप-विधियों का उद्देश्य केंद्र सरकार द्वारा संरक्षित संस्मारकों की सभी दिशाओं में 300 मीटर के अंदर भौतिक, सामाजिक और आर्थिक दखल के बारे में मार्गदर्शन देना है। 300 मीटर के क्षेत्र को दो भागों में बॉटा गया है (i) **प्रतिषिद्ध क्षेत्र,** यह क्षेत्र संरक्षित क्षेत्र अथवा संरक्षित संस्मारक की सीमा से शुरू होकर सभी दिशाओं में 100 मीटर की दूरी तक फैला है और (ii) **विनियमित क्षेत्र,** यह क्षेत्र प्रतिषिद्ध क्षेत्र की सीमा से शुरू होकर सभी दिशाओं में 200 मीटर की दूरी तक फैला है।

अधिनियम के उपबंधों के अनुसार, कोई भी व्यक्ति संरक्षित क्षेत्र और प्रतिषिद्ध क्षेत्र में किसी प्रकार का निर्माण अथवा खनन का कार्य नहीं कर सकता जबकि ऐसा कोई भवन अथवा संरचना जो प्रतिषिद्ध क्षेत्र में 16 जून, 1992 से पूर्व मौजूद था अथवा जिसका निर्माण बाद में महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की अनुमति से हुआ था, विनियमित क्षेत्र में किसी भवन अथवा संरचना का निर्माण, पुन:निर्माण, मरम्मत अथवा पुनरुद्धार की अनुमति सक्षम प्राधिकारी से लेना अनिवार्य है।

2.2 धरोहर उप-विधियों से संबंधित अधिनियम के उपबंध:

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ङ और प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (धरोहर उप-विधियों का विनिर्माण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम 2011 के नियम 22 में संरक्षित संस्मारकों के लिए उप-विधि बनाना विनिर्दिष्ट है। नियम में धरोहर उप-विधि बनाने के लिए मापदंडों का प्रावधान है। राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (प्राधिकरण के अध्यक्ष और सदस्यों की सेवा शर्तें तथा कार्य निष्पादन) नियम, 2011, नियम 18 में प्राधिकरण द्वारा धरोहर उप-विधियों के अनुमोदन की प्रक्रिया विनिर्दिष्ट है।

2.3 आवेदक के अधिकार और जिम्मेदारियां:

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ग में प्रतिषिद्ध क्षेत्र में मरम्मत और पुनरुद्धार अथवा विनियमित क्षेत्र में निर्माण अथवा पुनर्निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण के लिए नीचे दिए गए विवरण के अनुसार आवेदन का ब्यौरा विनिर्दिष्ट है:

(क) कोई व्यक्ति जो किसी ऐसे भवन अथवा संरचना का स्वामी है जो 16 जून, 1992 से पहले प्रतिषिद्ध क्षेत्र में मौजूद था अथवा जिसका निर्माण इसके उपरांत महानिदेशक के अनुमोदन से हुआ था तथा जो ऐसे भवन अथवा संरचना का किसी प्रकार की मरम्मत अथवा नवीकरण का काम कराना चाहता है तो वह ऐसी मरम्मत और नवीकरण, जैसा भी स्थिति हो, को कराने के लिए सक्षम प्राधिकारी को आवेदन कर सकता है।

(ख) कोई व्यक्ति जो किसी विनियमित क्षेत्र में किसी भवन अथवा संरचना अथवा भूमि का स्वामी है और वह ऐसी भूमि पर ऐसे भवन अथवा संरचना अथवा का कोई निर्माण अथवा पुन:निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण जैसी भी स्थिति हो, करना चाहता है तो वह निर्माण अथवा पुन:निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण जैसी भी स्थिति हो, के लिए सक्षम प्राधिकारी को आवेदन कर सकता है।

(ग) सभी संबंधित सूचना प्रस्तुत करने तथा राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (प्राधिकरण के अध्यक्ष तथा सदस्यों की सेवा की शर्तें और कार्य संचालन) नियम, 2011 के अनुपालन की जिम्मेदारी आवेदक की होगी।

अध्याय III

संरक्षित स्थल - 1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश का स्थान और अवस्थिति

3.1 संरक्षित स्थल का स्थान एवं अवस्थिति:

संरक्षित स्थल उत्तर प्रदेश के महोबा जिले के महोबा शहर में स्थित है। महोबा शहर को झीलों के शहर के नाम से जाना जाता है। स्थान के भौगोलिक निर्देशांक इस प्रकार हैं:

अक्षांश 25˚17'49.21" उत्तर, **देशांतर** 79˚51'24.77" पूर्व।

संरक्षित स्थल के चारों ओर खुली भूमि, आवासीय, मिश्रित उपयोग वाली बस्तियाँ और कृषि भूमि है। दक्षिण-पूर्व, पूर्व और उत्तर-पूर्व दिशाओं में कुछ धार्मिक संरचनाएँ हैं। दक्षिण-पूर्व की ओर घनी आबादी वाला क्षेत्र है। पश्चिम की ओर छोटे-छोटे खेत और आवासीय बस्तियाँ हैं। निकटतम बस स्टेशन संरक्षित स्थल से 3.4 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। महोबा जंक्शन रेलवे स्टेशन संरक्षित स्थल से 2.5 किलोमीटर दूर है।

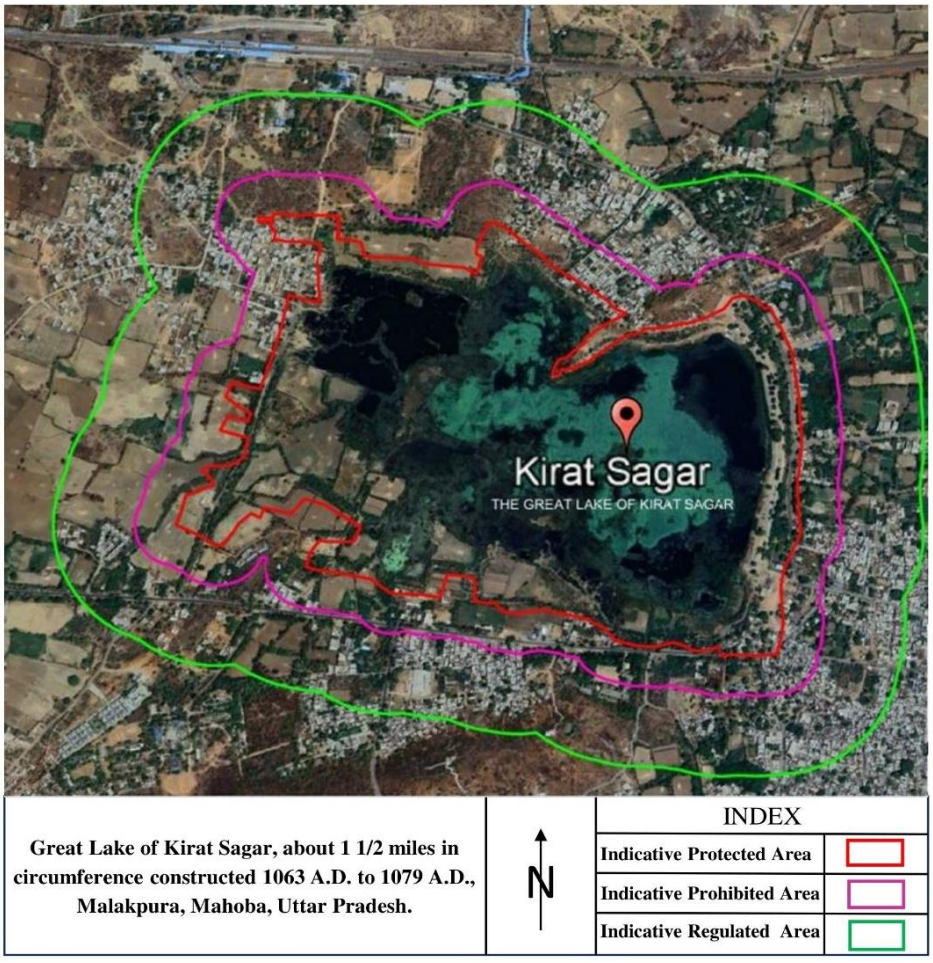

चित्र 1 क: 1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश का उपग्रह चित्र

कीरत सागर के निकट ही एक अन्य संरक्षित स्थल मदन सागर झील है, साथ ही अन्य संरक्षित संस्मारक भी हैं नामत: (i) मदन सागर में मंदिर की आधारशिला जिसे मझारी के नाम से जाना जाता है, (ii) मदन सागर झील के मध्य में खाकरा मठ, (iii) चंदेल राजकुमारों के खंडहर ग्रेनाइट मंदिर से संबंधित पांच आदमकद हाथी की मूर्तियाँ, जो मदन सागर झील में खाकरा मठ से कुछ सौ फीट उत्तर में एक चट्टानी द्वीप पर स्थित हैं, (iv) टिकरीपुरा में जुमा मस्जिद, (v) ग्रेनाइट स्तंभ, (vi) राजा परमार दीदेवा या परमाल का महल, जो उत्तर दिशा में स्थित पहाड़ी किले की चोटी पर स्थित है, (vii) उत्तर दिशा में आल्हा-की-लाट (2.8 मीटर ऊँचा) नामक एक छोटा पत्थर का स्तंभ और (viii) गोखर पहाड़ी पर तीर्थंकर की चौबीस चट्टान उत्खनित मूर्तियाँ। (चित्र 1ख)

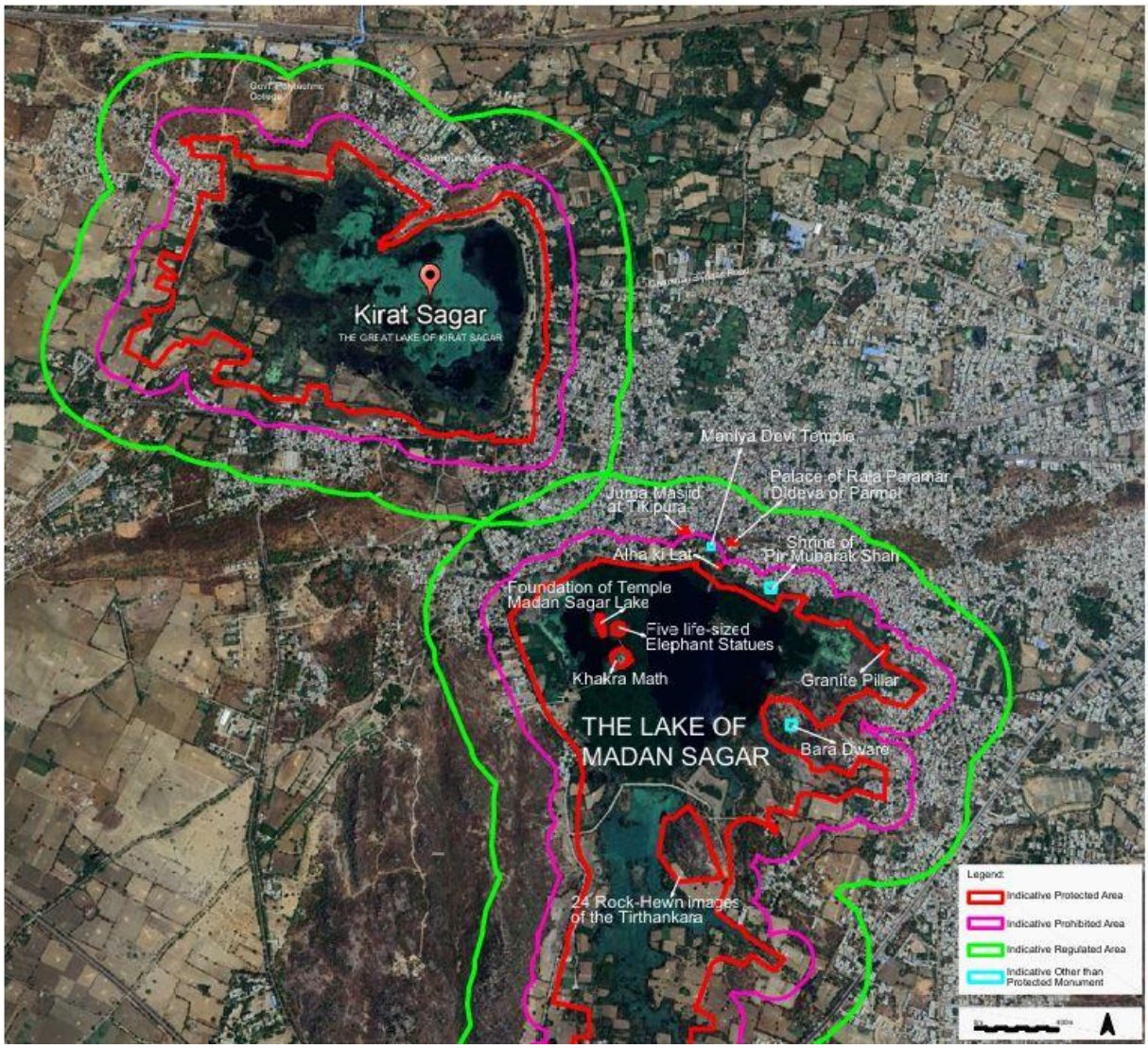

चित्र 1 ख: संरक्षित स्थल और आसपास के अन्य संस्मारकों का सांकेतिक गूगल उपग्रह चित्र

3.2 संरक्षित स्थल की संरक्षित सीमा:

संरक्षित स्थल की संरक्षित सीमा - 1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश की संरक्षित सीमाएं अनुलग्नक-I में देखी जा सकती हैं।

3.2.1 एएसआई रिकॉर्ड के अनुसार अधिसूचना मानचित्र/योजना:

1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश की अधिसूचना **अनुलग्नक-II** में देखी जा सकती है।

3.3 संरक्षित स्थल का इतिहास:

चंदेल वंश के कीर्ति वर्मा (1063-1097 ई.) ने इस सरोवरका निर्माण करवाया था। पृथ्वीराज चौहान और स्थानीय चंदेल राजा परमाल के बीच इस स्थान के पास 1182 ई. में एक ऐतिहासिक लड़ाई लड़ी गई थी।

3.4 संरक्षित स्थल का विवरण (वास्तुशिल्प विशेषताएँ, तत्व, सामग्री, आदि):

इस तालाब का निर्माण राजा कीर्ति वर्मा के शासनकाल में चंद्रावल नदी की सहायक नदी चंदनौर की धारा को मोड़कर करवाया गया था। तालाब का कुल क्षेत्रफल लगभग दो वर्ग किलोमीटर है, जिसमें पत्थर की चिनाई से बने घाट (झील तक जाने के लिए सीढ़ियाँ) हैं। इसके किनारे पर एक खंडहर बारादरी भी स्थित है।

3.5 वर्तमान स्थिति:

3.5.1 संरक्षित स्थल की स्थिति - स्थिति का आकलन:

संरक्षित स्थल का रखरखाव और संरक्षण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का विशेष अधिकार क्षेत्र है। स्थल की वर्तमान स्थिति को दर्शाने वाले चित्र **अनुलग्नक-IV** में संलग्न हैं।

3.5.2 प्रतिदिन आने वाले लोगों की संख्या और कभी-कभी एकत्रित होने वाले लोगों की संख्या:

संरक्षित स्थल पर प्रतिदिन औसतन 100-120 आगंतुक आते हैं और होली, दिवाली, परेवा जैसे त्यौहारों पर लगभग 300-400 लोग संरक्षित स्थल पर आते हैं। ऐतिहासिक कजरी मेले के अवसर पर हर साल लगभग 4,000 आगंतुक आते हैं।

अध्याय IV

स्थानीय क्षेत्र विकास योजनाओं में मौजूदा ज़ोनिंग, यदि कोई हो

4.1 मौजूदा ज़ोनिंग:

किसी भी मौजूदा स्थानीय प्राधिकरण द्वारा कोई विकास योजना तैयार नहीं की गई है या सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध नहीं कराई गई है। इसलिए, संरक्षित स्थल के लिए विशेष रूप से कोई निर्दिष्ट ज़ोनिंग मौजूद नहीं है।

4.2 स्थानीय निकायों के मौजूदा दिशानिर्देश:

"उत्तर प्रदेश नगर योजना एवं विकास अधिनियम-1973" में निहित उपबंधों के अनुसार **"विकास प्राधिकरण भवन निर्माण एवं विकास उपविधि 2008" (समय-समय पर संशोधित)** में उल्लिखित अनुसार निर्माण के लिए सामान्य दिशानिर्देश लागू होंगे।

"विकास प्राधिकरण भवन निर्माण एवं विकास उपविधि - 2008; संशोधित 2016, 2018 उप धारा - 3.1.9 (I) एवं (II)" में उल्लिखित संरक्षित स्थलों के लिए प्रावधान, जो निर्दिष्ट करता है कि केंद्र सरकार द्वारा संरक्षित के रूप में निर्दिष्ट संस्मारकों एवं विरासत स्थलों के लिए पुरातात्विक संस्मारकों/स्थलों की संरक्षित सीमा से 100 मीटर की परिधि (प्रतिषिद्ध क्षेत्र) के भीतर निर्माण एवं विकास की अनुमति नहीं है। इस प्रतिषिद्ध क्षेत्र से परे, 200 मीटर की दूरी (विनियमित क्षेत्र) तक निर्माण/विकास की अनुमति **"प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल एवं अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित"** के अनुसार सक्षम प्राधिकारी से अनिवार्यत: प्राप्त की जानी चाहिए।

अध्याय V

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अभिलेख (रिकार्ड) में परिभाषित सीमाओं के आधार पर प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों की प्रथम अनुसूची नियम 21 (1)/टोटल स्टेशन सर्वेक्षण के अनुसार सूचना

5.1 1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश की सर्वेक्षण योजना:

1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश की सर्वेक्षण योजना **अनुलग्नक-I** में देखी जा सकती है।

5.2 सर्वेक्षित आंकड़ों का विश्लेषण:

5.2.1 प्रतिषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र का विवरण और उनकी मुख्य विशेषताएं:

संरक्षित स्थल का संरक्षित क्षेत्र 266.258 एकड़ (लगभग) है।

संरक्षित स्थल का प्रतिषिद्ध क्षेत्र 129.95 एकड़ (लगभग) है।

संरक्षित स्थल का विनियमित क्षेत्र 297.422 एकड़ (लगभग) है।

प्रमुख विशेषताएं:

संरक्षित स्थल एक बड़ा जल सरोवर है जिसमें पत्थर से बनी सीढ़ियाँ हैं और झील के दक्षिण-पूर्वी दिशा में एक खंडहर बारादरी (मंडप) है। कीरत सागर झील का पूर्वी किनारा शहर के शहरी स्वरूप को बढ़ाता है।

5.2.2 निर्मित क्षेत्र का विवरण:

प्रतिषिद्ध क्षेत्र:

उत्तर: इस दिशा में आवास, मंदिर, पंप हाउस और राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज का लड़कों का छात्रावास भवन मौजूद है। उत्तर-पूर्व दिशा में तलसैया की मजार (मकबरा), एक कब्रिस्तान, प्राथमिक विद्यालय, जल निगम के अधिशासी अभियंता कार्यालय के कुछ हिस्से, एक कुआं, एक धोबी घाट, एक टिन शेड और एक छोटा मंदिर है।

पूर्व: इस दिशा में पक्के घाट (झील तक जाने वाली सीढ़ियाँ), कुछ धार्मिक संरचनाएँ (मंदिर, मस्जिद और मकबरे), कब्रिस्तान का हिस्सा, बिजलीघर, झलकारी बाई तिराहा बस स्टॉप, एक होटल की इमारत, कुछ मिश्रित उपयोग वाली इमारतें, अमर शहीद श्री राकेश चौरसिया का स्मारक और सार्वजनिक सुविधाएँ मौजूद हैं। स्थल का प्रवेश द्वार (कीरत-द्वार), संरक्षण सहायक - भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण कार्यालय, स्कूल, गोदाम, आवासीय इमारतें दक्षिण-पूर्वी दिशा में मौजूद हैं।

दक्षिण: राज्य पुस्तकालय, जल निगम कार्यालय के कुछ हिस्से, जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय, एक कब्रिस्तान, गायत्री मंदिर, मुकुंद लाल इंटरमीडिएट कॉलेज का एक हिस्सा, कुछ धार्मिक संरचनाएं (मंदिर और मकबरा) और कुछ मिश्रित उपयोग वाली इमारतें मौजूद हैं। दक्षिण-पूर्व दिशा में आवासीय और व्यावसायिक इमारतें भी हैं।

पश्चिम: इस दिशा में आवास और कुछ कोचिंग सेंटर मौजूद हैं।

विनियमित क्षेत्र:

उत्तर: इस दिशा में आवासीय, मिश्रित उपयोग वाली इमारतें तथा राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज और उसके छात्रावास भवन मौजूद हैं। उत्तर-पूर्व दिशा में बड़ावन मंदिर और जल निगम का अधिशासी अभियंता कार्यालय भवन मौजूद हैं।

पूर्व: आवासीय, मिश्रित उपयोग वाली इमारतें, मंदिर, कब्रिस्तान का एक हिस्सा और आर्य समाज मंदिर मौजूद हैं। आवासीय, मिश्रित उपयोग वाली इमारतें, राजकोट मंदिर और कुछ अन्य धार्मिक संरचनाएं दक्षिण-पूर्वी दिशा में मौजूद हैं।

दक्षिण: आवासीय, मिश्रित उपयोग वाली इमारतें, इवेंजेलिकल चर्च, पंप हाउस, जल निगम कार्यालय के कुछ हिस्से, बीएसएनएल टेलीफोन एक्सचेंज कार्यालय, ग्लोबल अस्पताल, शैलेंद्र चौहान एमपी स्कूल, एक मंदिर, एक बस स्टॉप, फायर स्टेशन, मुकुंद लाल इंटरमीडिएट कॉलेज और कुछ व्यावसायिक संरचनाएं मौजूद हैं। आवासीय सोसायटी (गरीब आवास योजना) दक्षिण-पश्चिमी दिशा में मौजूद है।

पश्चिम: इस दिशा में आवासीय एवं मिश्रित उपयोग वाली संरचनाएं मौजूद हैं।

5.2.3 हरित/खुले स्थानों का विवरण:

उत्तर: घनी वनस्पतियों से भरी खुली भूमि, आलमपुरा पहाड़ी, तालसैया की पहाड़ी, टीले, खुले मैदान और खाली जमीन के टुकड़े मौजूद हैं। इस दिशा में ताड़ और मौसमी पेड़ों के विभिन्न समूह भी मौजूद हैं।

पूर्व: खेती योग्य भूमि, घना वन क्षेत्र, टीला, एक झील, बड़ी बंधी झील और परारी झील मौजूद हैं। रामलीला मैदान दक्षिण-पूर्व दिशा में स्थित है।

दक्षिण: खाली जमीन, घने जंगल और टीले मौजूद हैं। दक्षिण-पश्चिमी दिशा में खेती की जमीन मौजूद है। साथ ही ताड़ और मौसमी पेड़ों के समूह भी मौजूद हैं।

पश्चिम: खेती की भूमि और घनी वनस्पति मौजूद है। उत्तर-पश्चिमी दिशा में ताड़ और मौसमी पेड़ों के टीले और घने समूह मौजूद हैं।

5.2.4 परिसंचरण के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र - सड़कें, फुटपाथ आदि:

कीरत सागर झील के पूर्वी तट पर बना प्लेटफॉर्म कंक्रीट पेवर इंटरलॉकिंग ब्लॉकों से बना है, जिसका इस्तेमाल मुख्य रूप से पैदल चलने वालों के आवागमन के लिए किया जाता है। स्थल के पास की सभी प्रमुख सड़कें पक्की सड़के हैं, जैसे उत्तर और पूर्व दिशा में मुस्करा-महोबा-चरखारी मार्ग और दक्षिण दिशा में राठ मार्ग।

5.2.5 भवनों की मौजूदा ऊंचाई (क्षेत्रवार):

उत्तर: संरचनाओं/भवनों की ऊंचाई जी से जी+3 तक है तथा जिनकी अधिकतम ऊंचाई 12 मीटर (लगभग) है।

पूर्व: संरचनाओं/भवनों की ऊंचाई जी से जी+2 तक है तथा जिनकी अधिकतम ऊंचाई 10 मीटर (लगभग) है।

दक्षिण: संरचनाओं/भवनों की ऊंचाई जी से जी+3 तक है तथा जिनकी अधिकतम ऊंचाई 12 मीटर (लगभग) है।

पश्चिम: संरचनाओं/भवनों की ऊंचाई जी से जी+2 तक है तथा जिनकी अधिकतम ऊंचाई 10 मीटर (लगभग) है।

5.2.6 प्रतिषिद्ध/विनियमित क्षेत्र के भीतर स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा राज्य संरक्षित संस्मारक और सूचीबद्ध धरोहर भवन, यदि उपलब्ध हों:

संरक्षित स्थल के प्रतिषिद्ध एवं विनियमित क्षेत्र में कोई राज्य संरक्षित संस्मारक या स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा सूचीबद्ध विरासत भवन मौजूद नहीं हैं।

5.2.7 सार्वजनिक सुविधाएं:

शौचालय, पेयजल, पार्किंग, सूचना काउंटर और बेंच जैसी सार्वजनिक सुविधाएं मौजूद हैं।

5.2.8 संस्मारक तक पहुंच:

स्थल तक पहुंचने के लिए मुस्करा-महोबा-चरखारी मार्ग नामक ब्लैक टॉप वाली सड़क है, जो कीर्ति द्वार (किर्ति गेट) के बाद पक्की सड़क में बदल जाती है और संरक्षित स्थल के किनारों तक जाती है।

5.2.9 अवसंरचनात्मक सेवाएं (जल आपूर्ति, वर्षा जल निकासी, सीवेज, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, पार्किंग आदि):

अवसंरचनात्मक सेवाएं मौजूद हैं।

5.2.10 स्थानीय निकायों के दिशा-निर्देशों के अनुसार क्षेत्र का प्रस्तावित ज़ोनिंग:

वर्तमान में किसी भी स्थानीय प्राधिकरण द्वारा कोई विकास योजना तैयार नहीं की गई है। इसलिए, वर्तमान में कोई ज़ोनिंग प्रस्तावित नहीं है।

अध्याय VI

संरक्षित स्थल का वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व

6.1 वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व:

वास्तुशिल्पीय मूल्य:

चंदेल वंश के राजा कीर्ति वर्मा द्वारा निर्मित यह सरोवर लगभग दो वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है और इसमें पत्थर की चिनाई वाले घाट (झील तक जाने के लिए सीढ़ियाँ) हैं। इसे चंदनौर नदी की धारा को मोड़कर बनाया गया था जो उस समय के उन्नत इंजीनियरिंग कौशल को दर्शाता है। इसके किनारे पर एक खंडहर बारादरी (मंडप) भी स्थित है जो वास्तुकला की रुचि को बढ़ाता है और उस युग के डिजाइन और कार्यक्षमता को दर्शाता है।

ऐतिहासिक मूल्य:

यह स्थल ऐतिहासिक महत्व रखता है क्योंकि इसका निर्माण राजा कीर्ति वर्मा के शासनकाल (1063-1097 ई.) के दौरान हुआ था और यह ऐतिहासिक रूप से पृथ्वीराज चौहान और चंदेल राजा परमाल के बीच वर्ष 1182 ई. में लड़े गए पौराणिक युद्ध से जुड़ा हुआ है। इस युद्ध ने चंदेल वंश के पतन को इंगित किया और यह भारतीय इतिहास की एक प्रमुख घटना है।

पुरातात्विक मूल्य:

इस स्थल की पत्थर की चिनाई, खंडहर हो चुकी बारादरी और मोड़ देकर बनाई गई नदी चंदेल काल की उन्नत निर्माण और जल प्रबंधन तकनीकों को उजागर करती है। इस क्षेत्र में युद्ध से संबंधित कलाकृतियाँ भी हो सकती हैं जो क्षेत्र के इतिहास और सैन्य प्रथाओं के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करती हैं।

6.2 संरक्षित स्थल की संवेदनशीलता (जैसे विकासात्मक दबाव, शहरीकरण, जनसंख्या दबाव आदि):

झील के तटबंध का ज़्यादातर हिस्सा खेती के लिए प्रयोग किया जाता है। शहर के विस्तार के साथ, इसके आस-पास के इलाकों में भविष्य में विकास होने की संभावना है और बढ़ते शहरीकरण के कारण दबाव का सामना करना पड़ सकता है।

6.3 संरक्षित स्थल या क्षेत्र से दृश्यता और विनियमित क्षेत्र से दृश्यता:

संरक्षित स्थल से प्रतिषिद्ध एवं विनियमित क्षेत्र की ओर:

पूर्व दिशा में पक्के घाट (झील तक जाने वाली सीढ़ियाँ), कुछ दुकानें, धार्मिक संरचनाएँ (मंदिर और मकबरा), सार्वजनिक सुविधाएँ, बिजलीघर, घनी वनस्पतियाँ, मुस्करा-महोबा-चरखारी मार्ग के किनारे आवासीय और मिश्रित उपयोग वाली संरचनाएँ दिखाई देती हैं। उत्तर-पूर्व दिशा में धोबी घाट, तालसैया मज़ार (मकबरा), एक कब्रिस्तान और एक प्राथमिक विद्यालय दिखाई देता है।

उत्तर दिशा में रिहायशी और मिश्रित उपयोग वाली इमारतें, कुछ धार्मिक इमारतें, सरकारी पॉलिटेक्निक कॉलेज का लड़कों का छात्रावास, घनी वनस्पति, खुली ज़मीन और पहाड़ियाँ दिखाई देती हैं। उत्तर-पश्चिम दिशा में रिहायशी और मिश्रित उपयोग वाली इमारतें दिखाई देती हैं।

पश्चिम की ओर खेती की जमीन और घनी वनस्पति दिखाई देती है। दक्षिण-पश्चिम में एक आवासीय सोसायटी, जल निगम कार्यालय, बीएसएनएल टेलीफोन एक्सचेंज कार्यालय और खेती की जमीन दिखाई देती है।

दक्षिण की ओर कई धार्मिक संरचनाओं वाली एक पहाड़ी दिखाई देती है। दक्षिण-पूर्व में स्थल का प्रवेश द्वार, खुली भूमि, एक स्कूल भवन, आवासीय और मिश्रित उपयोग वाली संरचनाएँ, धार्मिक संरचनाएँ (मंदिर और क्राइस्ट चर्च) और संरक्षण सहायक - भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण कार्यालय दिखाई देते हैं।

प्रतिषिद्ध एवं विनियमित क्षेत्र से संरक्षित स्थल की ओर:

पूर्वी दिशा से संरक्षित स्थल प्रतिषिद्ध क्षेत्र से दिखाई देता है, लेकिन विनियमित क्षेत्र से नहीं, क्योंकि पक्के घाट (झील तक जाने वाली सीढ़ियाँ) ऊँचे हैं और दृश्य को बाधित करते हैं। केवल 'आल्हा की बैठक' - खंडहर हो चुकी बारादरी - विनियमित क्षेत्र से दिखाई देती है क्योंकि इसकी ऊँचाई संरक्षित स्थल के बाकी हिस्सों से बहुत अधिक है।

उत्तरी दिशा से संरक्षित स्थल खुली भूमि, आवासीय भवनों की छतों और राजकीय पॉलिटेक्निक परिसर के लड़कों के छात्रावास से दिखाई देता है।

पश्चिमी दिशा से संरक्षित स्थल खेती की भूमि और आवासीय भवनों की छतों से दिखाई देता है। दक्षिणी दिशा से संरक्षित स्थल पहाड़ी से दिखाई देता है।

6.4 पहचान किया जाने वाला भूमि उपयोग:

आस-पास के स्थल पर पहचान किया जाने वाला भूमि उपयोग मुख्य रूप से कृषि, धार्मिक, सार्वजनिक और अर्ध-सार्वजनिक है। उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व में कुछ आवासीय क्षेत्रों की भी पहचान की गई है।

6.5 संरक्षित स्थल के अलावा पुरातात्विक विरासत अवशेष:

कीरत सागर झील के आसपास कई संस्मारक हैं, इसलिए पुरातात्विक अवशेष मिलने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता।

6.6 सांस्कृतिक परिदृश्य:

कीरत सागर झील का निर्माण समुदाय की पानी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए किया गया था। इसके अलावा इसके किनारों पर धार्मिक संरचनाएँ भी हैं, जहाँ लोग धार्मिक अनुष्ठान करते हैं।

हर साल, बड़ी संख्या में लोग प्रसिद्ध कजरी मेले के लिए इस स्थल के पूर्वी तटबंध पर इकट्ठा होते हैं, जो पृथ्वीराज चौहान और चंदेल राजा परमाल के बीच 1182 ई. में लड़े गए युद्ध की याद में प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है।

6.7 महत्वपूर्ण प्राकृतिक परिदृश्य जो सांस्कृतिक परिदृश्य का हिस्सा बनते हैं और संस्मारकों/स्थलों को पर्यावरण प्रदूषण से बचाने में मदद करते हैं:

तटों पर आम, पीपल और बरगद जैसे बड़े पेड़ों की मौजूदगी प्राकृतिक अवरोध के रूप में काम करती है, जो प्रदूषकों को छानते हैं और वायु की गुणवत्ता में सुधार करते हैं, जिससे आस-पास के स्थलों को पर्यावरणीय क्षति से बचाया जा सकता है। धार्मिक संरचनाओं को हरियाली से लाभ मिलता है, जो धूल और मिट्टी के कटाव के संपर्क को कम करती है। दक्षिण और पश्चिम की ओर छोटी हरी पहाड़ियाँ स्थानीय सूक्ष्म जलवायु को नियंत्रित करने, मिट्टी के कटाव को कम करने और संभावित बाढ़ से स्थल की रक्षा करने में मदद करती हैं। इसके अतिरिक्त, पश्चिम की ओर विस्तृत खेती की भूमि मिट्टी के संरक्षण और जल प्रतिधारण में योगदान देती है, जिससे स्थल पर्यावरणीय क्षरण से और अधिक सुरक्षित रहता है।

6.8 खुली जगह और निर्माण का उपयोग:

स्थानीय समुदाय के लोग संरक्षित स्थल के पूर्वी भाग में पक्के घाटों (झील की सीढ़ियाँ) और तटों का उपयोग मनोरंजन और धार्मिक गतिविधियों के लिए करते हैं। तटों पर कुछ धार्मिक संरचनाएँ धार्मिक अनुष्ठानों और समारोहों के लिए उद्देश्य को पूरा करती हैं। घाटों (झील की सीढ़ियाँ) में कई पीपल और आम के पेड़ भी हैं, जो पर्याप्त छाया प्रदान करते हैं जिनके नीचे कई काफी छात्र अध्ययन करने आते हैं। झील का उत्तर-पूर्वी भाग धोबी स्थल के रूप में कार्य करता है। उत्तर और पश्चिम की भूमि का उपयोग खेती के लिए किया जाता है। निर्माण का उपयोग मुख्य रूप से आवासीय, सार्वजनिक और अर्ध-सार्वजनिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है।

6.9 पारंपरिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ:

संरक्षित स्थल के प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र के भीतर धार्मिक संरचनाओं में अनुष्ठान और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। हर साल आयोजित होने वाला प्रसिद्ध कजरी मेला एक प्रमुख सांस्कृतिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है।

6.10 संरक्षित स्थल और विनियमित क्षेत्रों से दिखाई देने वाला क्षितिज:

संरक्षित स्थल से दिखाई देने वाला पूर्वी क्षितिज पक्के घाटों (झील तक जाने वाली सीढ़ियाँ), पेड़ों और धार्मिक संरचनाओं का मिश्रण है। उत्तर की ओर संरक्षित स्थल से दिखाई देने वाला क्षितिज घनी वनस्पतियों, पहाड़ियों, टीलों, धार्मिक संरचनाओं, सरकारी पॉलिटेक्निक के लड़कों के छात्रावास भवन और आवासीय भवनों का मिश्रण है। पश्चिम दिशा में संरक्षित स्थल से दिखाई देने वाला क्षितिज घनी वनस्पतियों, खेती की गई भूमि, टीलों, बीएसएनएल टावर और आवासीय भवनों का मिश्रण है। दक्षिण में संरक्षित स्थल से दिखाई देने वाला क्षितिज घनी वनस्पतियों, पहाड़ियों, टीलों और धार्मिक संरचनाओं का मिश्रण है।

एक जलाशय होने के कारण संरक्षित स्थल किसी भी क्षितिज का हिस्सा नहीं है।

6.11 पारंपरिक वास्तुकला:

संरक्षित स्थल के आस-पास मिट्टी से निर्मित कई आवासीय इमारतें हैं जिनकी छतें देशी टाइलों से बनी हैं। घाटों (तटों) के पास स्थित मंदिर मालवा स्थापत्य शैली को प्रदर्शित करते हैं। इसके अतिरिक्त संरक्षित स्थल के पास लखौरी ईंटों से बनी कुछ जीर्ण-शीर्ण इमारतें भी हैं।

6.12 स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा उपलब्ध विकास योजना:

किसी भी मौजूदा स्थानीय प्राधिकरण द्वारा कोई विकास योजना तैयार नहीं की गई है या सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध नहीं कराई गई है।

6.13 भवन संबंधी मापदंड:

संरक्षित स्थल - कीरत सागर की विशाल झील दूसरे संरक्षित स्थल नामत: 1129-65 ईस्वी में निर्मित, परिधि में लगभग 3 मील की मदन सागर झील के काफी निकट स्थित है। अत: कीरत सागर विशाल झील का विनियमित क्षेत्र उपर्युक्त संरक्षित स्थल के विनियमित क्षेत्र के साथ ओवरलैप करता है। निर्माण का कोई स्थल एक संरक्षित स्थल के प्रतिषिद्ध क्षेत्र और दूसरे संरक्षित स्थल के विनियमित क्षेत्र में एक साथ पड़ने की स्थिति में, निर्माण के स्थल को केवल प्रतिषिद्ध क्षेत्र में पड़ने वाला माना जाएगा और भवन संबंधी मापदंड तदनुसार लागू होंगे। इसके अतिरिक्त यदि निर्माण स्थल दो अलग-अलग संस्मारकों के विनियमित क्षेत्र में आता है, तो प्रस्तावित निर्माण के कारण संस्मारक पर संभावित प्रतिकूल प्रभाव जो निर्माण स्थल के करीब है, को प्राथमिकता दी जाएगी।

6.13.1 मरम्मत और नवीनीकरण (प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र में):

आंतरिक परिवर्तन और अनुकूली पुनः उपयोग की सामान्य रूप से अनुमति दी जा सकती है। हालाँकि, बाहरी परिवर्तन सक्षम प्राधिकारी द्वारा विस्तृत जाँच के अधीन होंगे। ऐसे परिवर्तन जिनमें रेट्रोफिटिंग/नवीनीकरण शामिल है, की अनुमति तब दी जा सकती है जब इमारत संरचनात्मक रूप से कमज़ोर या असुरक्षित हो या जब उस पर किसी प्राकृतिक आपदा का प्रतिकूल प्रभाव पड़ा हो और नवीनीकरण अत्यंत आवश्यक हो। मूल इमारत शब्दावली और लेआउट के साथ-साथ निर्मित-खुले संबंधों का पालन किया जाना चाहिए। सक्षम प्राधिकारी से पूर्व अनुमति के अधीन इमारतों की सामान्य मरम्मत और रखरखाव की अनुमति होगी।

भवन/संरचनाओं में मरम्मत और नवीनीकरण संरक्षित संस्मारक और उसके आस-पास के क्षेत्रों की धरोहर विशेषताओं के अनुरूप और उससे मेल खाता होना चाहिए। एल्युमिनियम कम्पोजिट पैनल (एसीपी), हाई प्रेशर लैमिनेट्स (एचपीएल), लैमिनेट्स, टाइलिंग या ग्लेज़िंग जैसी नई क्लैडिंग सामग्री की अनुमति नहीं दी जाएगी। मरम्मत और नवीनीकरण कार्यों को करने में स्थानीय रूप से उपलब्ध निर्माण सामग्री के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

6.13.2 पुनर्निर्माण:

पुनर्निर्माण को एएमएएसआर अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 2(त) में परिभाषित किया गया है तथा विनियमित क्षेत्र में पुनर्निर्माण की अनुमति एएमएएसआर अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ग(2) और एएमएएसआर (विरासत उपनियमों का निर्धारण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम, 2011 के नियम 6(IV) और नियम 7 के अनुसार दी जाती है। किसी संरक्षित संस्मारक या संरक्षित क्षेत्र के प्रतिषिद्ध या विनियमित क्षेत्र में स्थित किसी भी प्रकार के भवन या सरंचना, जो प्राकृतिक आपदाओं से ध्वस्त या क्षतिग्रस्त हो गयी है, और जिसकी मरम्मत नहीं की जा सकती है, के मामले में पुनर्निर्माण की एएमएएसआर (विरासत उपनियमों का निर्धारण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम, 2011 के नियम 16 के अनुसार दी जाती है। प्राकृतिक आपदा के कारण क्षतिग्रस्त भवन अथवा संरचना के पुनर्निर्माण की अनुमति उसी सीमा तक दी जाएगी जितनी कि क्षति हुई है। पुनर्निर्माण के मामले में पुरानी इमारत के प्रतिस्थापन के रूप में नई संरचना या इमारत को पहले से मौजूद संरचना के अनुसार उसी क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर सीमाओं का पालन करना होगा। अग्रभाग में असंगत सामग्री जैसे ग्लेज़िंग, मेटल क्लैडिंग, एल्युमीनियम कम्पोजिट पैनल (एसीपी), हाई प्रेशर लैमिनेट्स (एचपीएल), टाइल्स, लैमिनेट्स के उपयोग की अनुमति नहीं होगी। नई संरचना संरक्षित संस्मारक के धरोहर क्षेत्र और उसके आसपास के क्षेत्र के साथ मेल खाती और उसके अनुरूप होनी चाहिए।

6.13.3 नया निर्माण:

6.13.3.क प्रतिषिद्ध क्षेत्र:

एएमएएसआर अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20क(4) के अनुसार, संरक्षित स्थल के प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर किसी भी सार्वजनिक कार्य या जनता के लिए आवश्यक परियोजना या अन्य निर्माण सहित किसी भी नए निर्माण की अनुमति नहीं दी जाएगी।

6.13.3.ख विनियमित क्षेत्र:

विकास प्राधिकरण भवन निर्माण एवं विकास उपविधि 2008, 2016 में संशोधित (खण्ड 1.1.1, 1.1.2, तथा 1.2.1) में निर्दिष्ट सभी विकास नियंत्रण मानदंड और भवन विनियम, जो "उत्तर प्रदेश नगर नियोजन एवं विकास अधिनियम - 1973" के अंतर्गत परिभाषित हैं, जब भी संशोधित होंगे, लागू होंगे। हालाँकि, इस दस्तावेज़ में निर्दिष्ट ऊँचाई और अन्य मापदंड संरक्षित स्थल के विनियमित क्षेत्र में लागू होंगे।

स्थल के विनियमित क्षेत्र के मौजूदा भूमि उपयोग पर निर्दिष्ट छूट के अंतर्गत आने वाले निर्माण की अनुमति होगी। कृषि भूमि पर इन अनुमेय निर्माणों में कृषि में लगे लोगों के लिए आवास और सहायक भवन या फसलों, चारा, खाद, कृषि उपकरणों के भंडारण और अन्य समान सुविधाओं के लिए संरचनाओं का निर्माण शामिल है।

1. **स्थल पर नए निर्माण की ऊंचाई (ममटी, पैरापेट, जल भंडारण टैंक, मशीन रूम, एचवीएसी इकाई, सौर पैनल, वर्षा जल संचयन प्रणाली, पेंटहाउस, टेरेस गार्डन की संरचनाएं, आदि) या छत पर कोई अन्य सेवाएं:**

नए निर्माण या मौजूदा इमारतों में परिवर्धन/परिवर्तन के लिए अधिकतम ऊंचाई सीमा **10.50 मीटर** से अधिक नहीं होगी। (ममटी, पैरापेट, जल भंडारण टैंक, मशीन रूम, एचवीएसी इकाई, सौर पैनल, वर्षा जल संचयन प्रणाली, पेंटहाउस, टेरेस गार्डन की संरचनाएं, आदि) या छत पर कोई अन्य सेवाएं।

जहां तक संभव हो, बेसमेंट के निर्माण को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

2. **उपयोग:**

(i) वर्तमान भूमि उपयोग को बरकरार रखा जाए।

(ii) स्थल के विनियमित और प्रतिषिद्ध क्षेत्र में जलाशयों द्वारा आच्छादित क्षेत्र को विद्यमान रूप में बनाए रखा जाए तथा उसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए।

3. **अग्रभाग डिजाइन:**

नए निर्माण के अग्रभाग का डिज़ाइन अधिमानतः न्यूनतम प्रकृति का होना चाहिए, ताकि यह संरक्षित स्थल और आस-पास के क्षेत्र की समग्र विरासत विशेषता को प्रभावित न करे। अग्रभाग का डिज़ाइन अधिमानतः सूक्ष्म, प्लास्टर किया हुआ और मिट्टी के रंगों (सफेद, ग्रे, बेज, भूरा आदि) में रंगा हुआ होना चाहिए।

4. **छत का डिज़ाइन:**

(i) सपाट छत के डिजाइन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

(ii) भवन की छत पर एल्युमीनियम, फाइबर ग्लास, पॉलीकार्बोनेट या इसी प्रकार की सामग्री का उपयोग करके अस्थायी प्रकृति की संरचनाओं के निर्माण को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

(iii) सभी सेवाएँ जैसे कि बड़ी एयर कंडीशनिंग इकाइयाँ, छत पर पानी का भंडारण टैंक या छत पर रखे गए बड़े जनरेटर सेट को स्क्रीन दीवारों (ईंट/सीमेंट शीट, लौवर, जालियाँ या अन्य ऐसे डिज़ाइन तत्वों) का उपयोग करके बंद किया जाना चाहिए। इन सभी सेवाओं को अधिकतम स्वीकार्य ऊँचाई में शामिल किया जाना चाहिए।

5. **निर्माण सामग्री:**

स्थल के आसपास के भवनों के अग्रभाग पर निर्माण सामग्री और रंग में एकरूपता बनाए रखी जा सकती है। बाहरी सजावट के लिए आधुनिक निर्माण सामग्री जैसे एल्युमीनियम क्लैडिंग, कांच की ईंटें और किसी भी अन्य सिंथेटिक टाइल या सामग्री का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। ईंट और पत्थर जैसी पारंपरिक निर्माण सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिए।

6. रंग:

बाहरी रंग संरक्षित स्थल के साथ सामंजस्य रखते हुए तटस्थ स्वर का होना चाहिए जैसे कि बफ सैंडस्टोन रंग, सफेद, बेज और अन्य मिट्टी के रंग जो संरक्षित स्थल और उसके आसपास के वातावरण के साथ कोई विपरीतता उत्पन्न न करें।

7. अन्य विनियम:

मेट्रो (भूमिगत या ओवरहेड), फुट-ओवर ब्रिज, फ्लाईओवर, बहु-स्तरीय पार्किंग या ऐसी किसी भी परियोजना जैसे किसी भी बड़े पैमाने पर सार्वजनिक बुनियादी ढांचा परियोजना के निर्माण का प्रस्ताव विस्तृत विरासत प्रभाव आकलन रिपोर्ट के अधीन होगा।

6.14 आगंतुक सुविधाएं और प्रसाधन:

संरक्षित स्थल के आसपास व्यवहार्यता के अनुसार अतिरिक्त आगंतुक सुविधाओं और प्रसाधनों पर विचार किया जा सकता है।

अध्याय VII

स्थल विशिष्ट सिफारिशें

7.1 स्थल विशिष्ट सिफारिशें:

i. कीरत सागर (तालाब या जलाशय) से आच्छादित क्षेत्र को उसकी वर्तमान स्थिति में संरक्षित किया जाना चाहिए तथा इसके मौजूदा उपयोग में किसी भी प्रकार के परिवर्तन को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

ii. संरक्षित स्थल या उसके आसपास के क्षेत्रों में एलईडी या डिजिटल साइन, प्लास्टिक फाइबर ग्लास या किसी अन्य अत्यधिक परावर्तक सिंथेटिक सामग्री का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

iii. स्थल के निकट, विशेषकर संरक्षित स्थल की सीमाओं पर, होर्डिंग्स, बिलबोर्ड और पोस्टर के रूप में किसी भी प्रकार के विज्ञापन की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

iv. संरक्षित स्थल के आसपास आवागमन के लिए पर्यावरण अनुकूल वाहनों के उपयोग को प्रोत्साहित किया जा सकता है, ताकि वाहनों से निकलने वाले उत्सर्जन और कंपन के कारण स्थल पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव को कम किया जा सके।

v. वर्षा जल संचयन जैसी सर्वोत्तम प्रथाओं सहित हरित भवनों के निर्माण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

7.2 अन्य सिफारिशें:

i. जब भी मास्टर प्लान, क्षेत्रीय योजना या विकास योजना तैयार की जाए या उसमें संशोधन किया जाए, तो उसमें राष्ट्रीय महत्व के सभी संरक्षित संस्मारकों और उनके प्रतिषिद्ध एवं विनियमित क्षेत्रों को स्पष्ट रूप से दर्शाया जाना चाहिए।

ii. वर्तमान में प्राधिकरण द्वारा कोई भूमि उपयोग योजना/मास्टर प्लान/ज़ोनिंग विनियम आदि तैयार नहीं किया गया है। इसलिए ऐसी योजनाओं को तैयार करते समय इस धरोहर उप-विधि के प्रावधानों को स्थानीय भवन उपविधि, जब भी वे तैयार किए जाएंगे, पर प्राथमिकता दी जाएगी।

iii. क्षेत्र को प्लास्टिक एवं पॉलीथीन मुक्त क्षेत्र घोषित किया जाना चाहिए।

iv. सांस्कृतिक विरासत स्थलों और परिसरों के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन दिशानिर्देश https://nidm.gov.in/PDF/pubs/NDMA/20.pdf पर देखे जा सकते हैं।

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CULTURE
NATIONAL MONUMENTS AUTHORITY

In exercise of the powers conferred by section 20E of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, as amended, read with Rule 22 of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (Framing of Heritage Bye-Laws and Other Functions of the Competent Authority) Rule, 2011, the following Heritage Bye-Laws for the Protected Site **"The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 A.D. to 1079 A.D, Malakpura, Tehsil and District – Mahoba, Uttar Pradesh",** prepared by the Competent Authority, in consultation with Indian Institute of Technology (BHU) Varanasi, U.P., were published on 31.07.2024 as required by sub-rule 2 of Rule 18 of the National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of Authority and Conduct of Business) Rules, 2011, for inviting objections or suggestions from the public;

The objections/suggestions, received before the specified date have duly been considered by the National Monuments Authority in consultation with the Competent Authority.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (5) of the Section 20E of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, as amended, the National Monuments Authority, hereby makes the following bye-laws, namely:

Heritage Bye-Laws for "The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 A.D. to 1079 A.D, Malakpura, Tehsil and District – Mahoba, Uttar Pradesh"

CHAPTER I

PRELIMINARY

1.1 Short title, Extent and Commencements:

(i) These bye-laws may be called the National Monument Authority Heritage Bye-Laws, 2025 of Protected Site **"The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 A.D. to 1079 A.D, Malakpura, Tehsil and District – Mahoba, Uttar Pradesh"**

(ii) They shall extend to the entire Prohibited and Regulated Area of the Protected Monuments/Sites.

(iii) The provisions of these bye-laws shall have effect notwithstanding anything inconsistent therewith contained in any other bye-laws, whether made before or after the commencement of these bye-laws, or in any instrument having effect by virtue of any bye-laws. It shall not be obligatory to carry out amendments in these bye-laws to make them consistent with any other bye-laws.

(iv) They shall come into force with effect from the date of their publication.

1.2 Definitions:

1. In these bye-laws, unless the context otherwise requires, -

(a) "ancient monument" means any structure, erection or monument, or any tumulus or place of interment, or any cave, rock sculpture, inscription or monolith, which is of historical, archaeological or artistic interest and which has been in existence for not less than one hundred years, and includes -

(i) the remains of an ancient monument,

(ii) the site of an ancient monument,

(iii) such portion of land adjoining the site of an ancient monument as may be required for fencing or covering in or otherwise preserving such monument, and

(iv) the means of access to, and convenient inspection of an ancient monument,

(b) "archaeological site and remains" means any area which contains or is reasonably believed to contain ruins or relics of historical or archaeological importance which have been in existence for not less than one hundred years, and includes:

(i) such portion of land adjoining the area as may be required for fencing or covering in or otherwise preserving it, and

(ii) the means of access to, and convenient inspection of the area,

(c) "Act" means the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, as amended,

(d) "Archaeological officer" means an officer of the Department of Archaeology of the Government of India not lower in rank than Assistant Superintendent of Archaeology,

(e) "Authority" means the National Monuments Authority constituted under Section 20F of the Act,

(f) "competent authority" means an officer not below the rank of Director of archaeology or Commissioner of archaeology of the Central or State Government or equivalent rank, specified, by notification in the Official Gazette, as the competent authority by the Central Government to perform functions under this Act:

Provided that the Central Government may, by notification in the Official Gazette, specify different competent authorities for the purpose of section 20C, 20D and 20E,

(g) "construction" means any erection of a structure or a building, including any addition or extension thereto either vertically or horizontally, but does not include any re-construction, repair and renovation of an existing structure or building, or, construction, maintenance and cleansing of drains and drainage works and of

public latrines, urinals and similar conveniences, or, the construction and maintenance of works meant for providing supply or water for public, or, the construction or maintenance, extension, management for supply and distribution of electricity to the public or provision for similar facilities for public,

(h) "Government" means The Government of India,

(i) "maintain", with its grammatical variations and cognate expressions, includes the fencing, covering in, repairing, restoring and cleansing of a Protected Monument, and the doing of any act which may be necessary for the purpose of preserving a Protected Monument or of securing convenient access thereto,

(j) "owner" includes:

(i) A joint owner invested with powers of management on behalf of himself andother joint owners and the successor-in-title of any such owner, and

(ii) Any manager or trustee exercising powers of management and the successor-in-office of any such manager or trustee,

(k) "prescribed" means prescribed by rules made under this Act;

(l) "Prohibited Area" means any area specified or declared to be a Prohibited Area under section 20A,

(m) "Protected Area" means any archaeological site and remains which is declared to be of national importance by or under this Act,

(n) "Protected Monument" means any ancient monument which is declared to be of national importance by or under this Act,

(o) "Regulated Area" means any area specified or declared to be a Regulated Area under section 20B,

(p) "re-construction" means any erection of a structure or building to its pre-existing structure, having the same horizontal and vertical limits,

(q) "repair and renovation" means alterations to a pre-existing structure or building, but shall not include construction or re-construction,

2. The words and expressions used herein and not defined shall have the same meaning as assigned in the Act or the rules made there under.

CHAPTER II

Background of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act, 1958, as amended

2.1 Background of the Act:

The Heritage Bye-Laws are intended to guide physical, social and economic interventions within 300 metres in all directions of the Protected Monument. The 300 metres area has been divided into two parts (i) the **Prohibited Area,** the area beginning at the limit of the Protected Area or the Protected Monument and extending to a distance of 100 metres in all directions and (ii) the **Regulated Area**, the area beginning at the limit of the Prohibited Area and extending to a distance of 200 metres in all directions.

As per the provisions of the Act, no person shall undertake any construction or mining operation in the Protected Area and Prohibited Area while permission for repair and renovation of any building or structure, which existed in the Prohibited Area before 16th day of June, 1992, or which had been subsequently constructed with the approval of Director General (DG), Archaeological Survey of India (ASI) and; permission for construction, re-construction, repair or renovation of any building or structure in the Regulated Area, must be sought from the Competent Authority.

2.2 Provision of the Act related to Heritage Bye-Laws:

The AMASR Act, 1958, as amended, Section 20E and Ancient Monument and Archaeological Sites and Remains (Framing of Heritage Bye-Laws and other function of the Competent Authority) Rules 2011, Rule 22, specifies framing of Heritage Bye-Laws for Protected Monuments.The Rule provides parameters for the preparation of Heritage Bye-Laws. The National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of Authority and Conduct of Business) Rules, 2011, Rule 18 specifies the process of approval of Heritage Bye-laws by the Authority.

2.3 Rights and Responsibilities of Applicant:

Section 20C of the AMASR Act, 1958, as amended, specifies details of application for repair and renovation in the Prohibited Area, or construction or re- construction or repair or renovation in the Regulated Area as described below:

(a) Any person, who owns any building or structure, which existed in a Prohibited Area before 16th day of June, 1992, or, which had been subsequently constructed with the approval of the Director General and desires to carry out any repair or renovation of such building or structure, may make an application to the Competent Authority for carrying out such repair and renovation as the case may be.

(b) Any person, who owns or possesses any building or structure or land in any Regulated Area, and desires to carry out any construction or re-construction or repair or renovation of such building or structure on such land, as the case may be, make an application to the Competent Authority for carrying out constructionor re-construction or repair or renovation as the case may be.

(c) It is the responsibility of the applicant to submit all relevant information and abide by the National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of the Authority and Conduct of Business) Rules, 2011.

CHAPTER III

Location and Setting of Protected Site - The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 A.D. to 1079 A.D, Malakpura, Tehsil and District – Mahoba, Uttar Pradesh

3.1 Location and Setting of the Protected Site:

The Protected Site is located in Mahoba town, Mahoba District of Uttar Pradesh. Mahoba town is popularly known as the City of Lakes. The geographical coordinates of the location are:

Latitude 25˚17’49.21”N, **Longitude** 79˚51’24.77”E.

Open land, residential, mixed-use settlements and agricultural lands surrounded the Protected Site. There are a few religious structures in the South-East, East and North-East directions. There is a densely populated area towards the South-East. There are small agricultural fields and residential settlements towards the West. The nearest bus station is located at a distance of 3.4 kilometres from Protected Site. The Mahoba Junction railway station is 2.5 kilometres from the Protected Site.

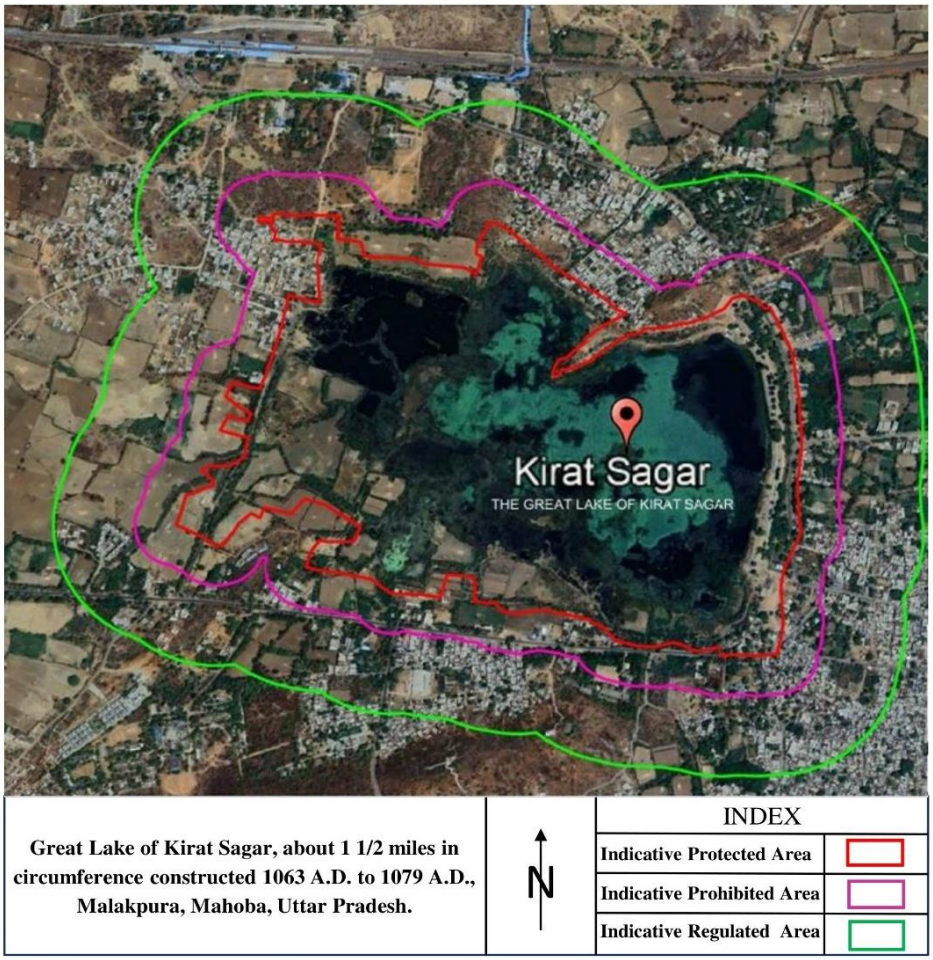

Figure 1 a: Satellite Imagery of The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 A.D. to 1079 A.D., Malakpura, Tehsil and District – Mahoba, Uttar Pradesh

There is another Protected Site Madan Sagar Lake, in the close proximity of the Kirat Sagar, along with other Protected Monuments namely: (i) The foundation of temple at Madan Sagar known as Majhari, (ii) Khakra Math in the middle of Madan Sagar lake, (iii) Five Life-Sized Elephant Statues belonging to the ruined granite temple of the Chandela Princes, situated on a rocky island which is a few hundred feet to the North of Khakra Math in the Madan Sagar Lake, (iv) Juma Masjid at Tikripura, (v) Granite Pillar, (vi) the palace of Raja Paramar Dideva or Parmal, situated on the top of the hill fort located in the North direction, (vii) a small stone pillar called Alha-ki-Lat (2.8 metres) high in the North direction and (viii) a twenty-four rock hewn images of the Tirthankara on the Gokhar Hillock. **(Figure 1b).**

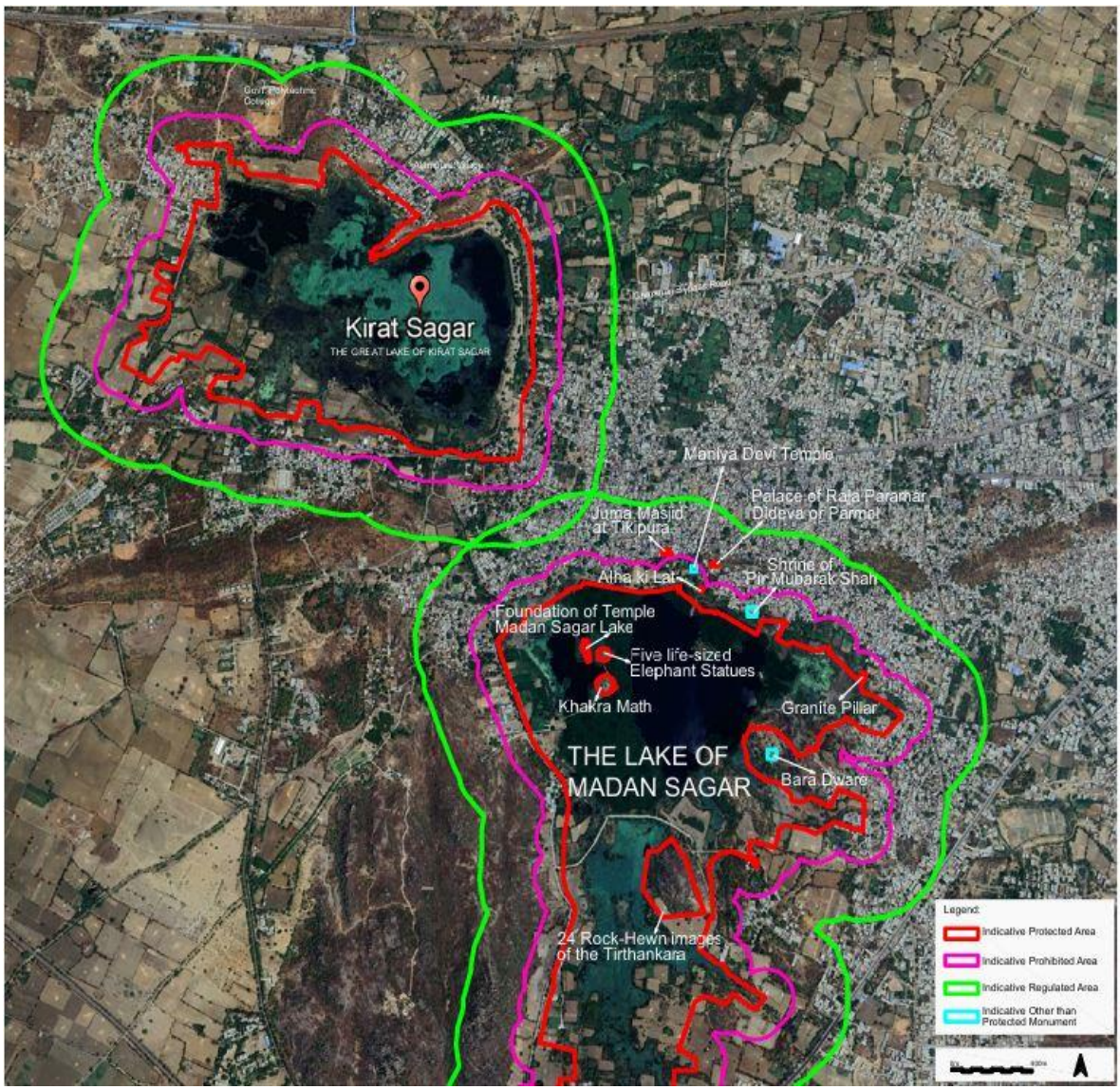

Figure 1 b: Indicative Google Satellite Imagery of the Protected Site and other monuments in the vicinity

3.2 Protected boundary of the Protected Site:

The Protected Boundaries of the Protected Site: **The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½miles in circumference, constructed from 1063 A.D. to 1079 A.D.,**

Malakpura, Tehsil and District -Mahoba, Uttar Pradesh may be seen in **Annexure-I**.

3.2.1 Notification Map/ Plan as per ASI records:

Notification of **The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference, constructed from 1063 A.D. to 1079 A.D., Malakpura, Tehsil and District -Mahoba, Uttar Pradesh** may be seen in **Annexure-II.**

3.3 History of the Protected Site:

Kirti Verma (1063–1097 CE) of the Chandela dynasty built this tank. A historic battle was fought in 1182 CE near the site between Prithviraj Chauhan and the local Chandela King Parmala.

3.4 Description of Protected Site (architectural features, elements, materials, etc.):

This tank was built during the reign of King Kirti Verma by diverting the Chandnaur, a tributary of the Chandrawal River. The total area of the tank is approximately two square kilometres with Ghats (steps to the lake) of stone masonry. A ruined Baradari is also located on its bank.

3.5 Current Status:

3.5.1 Condition of the Protected Site- condition assessment:

The maintenance and preservation of the Protected Site is the exclusive domain of Archaeological Survey of India. The photographs depicting the present condition of the site are appended in **Annexure-IV**.

3.5.2 Daily footfalls and occasional gathering numbers:

The average footfall at Protected Site is about 100–120 visitors per day and on festivals like Holi, Diwali, Parewa approximately 300–400 people visit the Protected Site. On the occasion of historical Kajari Mela approximately 4,000 visitors gather every year.

CHAPTER IV

Existing Zoning, if any, in the Local Area Development Plans

4.1 Existing Zoning:

There is no development plan prepared or made available in the public domain by any of the current local authorities. Therefore, there is no existing zoning specifically designated for the Protected Site.

4.2 Existing Guidelines of the Local Bodies:

The general guidelines for construction shall be applicable, as mentioned in the **"Development Authority Building Construction and Development Sub Method 2008"** (amended from time to time), as per the provisions laid in the **"Uttar Pradesh Municipal Planning and Development Act - 1973**."

Provisions for Protected Sites are outlined in the **"Development Authority Building Construction and Development Sub Method - 2008; Revised 2016, 2018 Subsection – 3.1.9 (I) and (II)"** which specifies that, for monuments and heritage sites designated as protected by the Central Government, construction and development within a 100 meters radius (Prohibited Area) from the Protected Boundary of archaeological monuments/sites are not allowed. Beyond this Prohibited Area, up to a distance of 200 meters (Regulated Area); permission for construction/development must be obtained from the Competent Authority in accordance with **"The Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, as amended."**

CHAPTER V

Information as per First Schedule, Rule 21(1)/ Survey Plan of the Prohibited and the Regulated Areas on the basis of Boundaries defined in Archaeological Survey of India records.

5.1 Survey Plan of The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 A.D. to 1079 A.D, Malakpura, Tehsil and District – Mahoba, Uttar Pradesh:

Survey Plan of **The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 A.D. to 1079 A.D, Malakpura, Tehsil and District – Mahoba, Uttar Pradesh** may be seen at **Annexure-I**.

5.2 Analysis of Surveyed Data:

5.2.1 Prohibited Area and Regulated Area details and their salient features:

Protected Area of the Protected Site is 266.258 Acres (approximately).
Prohibited Area of the Protected Site is 129.95 Acres (approximately).
Regulated Area of the Protected Site is 297.422 Acres (approximately).

Salient features:

The Protected Site is a large water tank with a stone-finished flight of steps and a ruined baradari (pavilion) on the South-Eastern direction of the lake. The Eastern bank of Kirat Sagar Lake enhances the town's urban fabric.

5.2.2 Description of Built-up Area:

Prohibited Area:

North: Residences, a temple, pump house and the boys' hostel building of the Government Polytechnic College are present in this direction. In the North-Eastern direction, there are Talasaiya ki Mazar (tomb), a graveyard, primary school, parts of the Jal Nigam Executive Engineers' Office, a well, a dhobi ghat, a tin shed and a small temple.

East: Pucca Ghats (steps to the lake), a few religious structures (temples, mosques and tombs), part of a graveyard, power house, Jhalkari Bai Tiraha bus stop, a hotel building, a few mixed-use buildings, Memorial of Amar Shaheed Shri Rakesh Chaurasiya and public amenities are present. The entrance gate to the site (Kirat-Dwar), Conservation Assistant- Archaeological Survey of India Office, school, warehouse, residential buildings are present in the South-Eastern direction.

South: State library, parts of Jal Nigam office, District Inspector of Schools office, a graveyard, Gayatri Temple, a part of Mukund Lal Intermediate College, a few religious structures (temple and tomb) and a few mixed-use buildings are present. There are also residential and commercial buildings in the South-Eastern direction.

West: Residences and a few coaching centres are present in this direction.

Regulated Area:

North: Residential, mixed-use buildings and Government Polytechnic College and its hostel buildings are present in this direction. Badavan Temple and Jal Nigam Executive Engineers office buildings are present in North-Eastern direction.

East: Residential, mix ed-use buildings, temples, a part of graveyard and Arya Samaj Temple are present. Residential, mixed-use buildings, Rajkot Temple and a few other religious structures are present in South-Eastern direction.

South: Residential, mixed-use buildings, Evangelical Church, pump house, parts of Jal Nigam Office, BSNL Telephone Exchange Office, Global Hospital, Shailendra Chauhan M.P. School, a temple, a bus stop, fire station, Mukund Lal Intermediate College and a few commercial structures are present. Residential society (Garib Awas Yojna) is present in South-Western direction.

West: Residential and mixed-use structures are present in this direction.

5.2.3 Description of Green/Open Spaces:

North: Open land with dense vegetation, Alampura Pahadi, Talasaiya ki Pahadi, mounds, open ground and patches of vacant lands are present. Various groups of Palm and seasonal trees are also present in this direction.

East: Cultivated lands, dense forest area, mound, a lake, Badi Bandhi Jheel and Parari Jheel are present. Ram-lila maidan is present in South-Eastern direction.

South: Vacant land, dense forest area and mounds are present. Cultivated lands are present in South-Western direction. Also, groups of Palm and seasonal trees are present.

West: Cultivated lands and dense vegetation are present. Mounds and dense groups of Palm and seasonal trees are present in North-Western direction.

5.2.4 Area covered under circulation – roads, footpaths etc:

The platform on the Eastern bank of the Kirat Sagar Lake is made up of concrete paver interlocking blocks, which are primarily used for pedestrian movement. All major roads near the site are in bitumen, like Muskara-Mahoba-Charkhari Marg in the Northern and Eastern directions and Rath Marg in the Southern direction.

5.2.5 Existing Heights of buildings (Zone wise):

North: The height of the structures/buildings range from G to G+3 structures with maximum height of 12 metres (approximately).

East: The height of the structures/buildings range from G to G+2 structures with a maximum height of 10 metres (approximately).

South: The height of the structures/buildings range from G to G+3 structures with a maximum height of 12 metres (approximately).

West: The height of the structures/buildings range from G to G+2 structures with a maximum height of 10 metres (approximately).

5.2.6 State Protected Monuments and Listed Heritage Buildings by Local Authorities, if available, within the Prohibited/Regulated Area:

There are no State Protected Monuments or Listed Heritage Buildings by Local Authorities present in the Prohibited and Regulated Area of the Protected Site.

5.2.7 Public Amenities:

Public amenities like toilets, drinking water, parking, information counter and benches are present.

5.2.8 Access to Protected Site:

The access to the site is by the black top road Muskara-Mahoba-Charkhari Marg, which turns into a paver block road after the Kirti Dwar (Kirti-Gate) leading to the banks of Protected Site.

5.2.9 Infrastructure Services (water supply, stormwater drainage, sewage, solid waste management, parking etc.):

Infrastructure Services are present.

5.2.10 Proposed Zoning of the Area as per guidelines of the Local Bodies:

No development plan has been prepared by any of the current local authorities. Therefore, at present no zoning is proposed.

CHAPTER VI

Architectural, Historical and Archaeological Value of the Protected Site

6.1 Architectural, Historical and Archaeological Value:

Architectural Value:

The tank, built by King Kirti Verma of the Chandela dynasty, covers about two square kilometres and features stone masonry Ghats (steps to the lake). It was created by diverting the Chandnaur River, showing advanced engineering skills of the time. A ruined baradari (pavilion) is also located on its bank, adding to the architectural interest and reflecting the era's design and functionality.

Historical Value:

This site holds historical importance as it was built during King Kirti Verma's reign (1063–1097 CE) and historically associated with the legendary battle fought between Prithviraj Chauhan and the Chandela King Parmala in the year 1182 C.E. This battle marked the decline of the Chandela dynasty and is a key event of Indian history.

Archaeological Value:

The site’s stone masonry, the ruined baradari and the diverted river highlight the advanced construction and water management techniques of the Chandela period. The area may also contain artifacts from the battle, offering valuable insights into the region's history and military practices.

6.2 Sensitivity of the Protected Site (e.g., developmental pressure, urbanisation, population pressure etc.):

Most of the lake's embankment is used for cultivation. With the town's expansion, the areas in its vicinity are likely to be developed in the future and may face pressure from growing urbanization.

6.3 Visibility from the Protected Site or Area and visibility from Regulated Area:

From the Protected Site towards the Prohibited and Regulated Area:

To the East, pucca ghats (steps to the lake), a few vending shops, religious structures (temple and tomb), public amenities, powerhouse, dense vegetation, residential and mixed-use structures along the Muskara-Mahoba-Charkhari Marg are visible. In the North-Eastern direction, Dhobi Ghat, Talasaiya Mazar (tomb), a graveyard and a primary school are visible.

To the North, residential and mixed-use structures, a few religious buildings, the boys' hostel of Government Polytechnic College, dense vegetation, open land and hillocks are visible. To the North-West, residential and mixed-use structures are visible.

To the West, cultivated lands and dense vegetation are visible. In the South-West, a residential society, Jal Nigam office, BSNL Telephone Exchange office and cultivated lands are visible.

To the South, a hillock with several religious structures is visible. In the South-East, the entrance to the site, open land, a school building, residential and mixed-use structures, religious structures (temple and Christ Church) and the Conservation Assistant- Archaeological Survey of India office are visible.

From the Prohibited and Regulated Area towards the Protected Site:

From the Eastern direction, the Protected Site is visible from the Prohibited Area but not from the Regulated Area, as the pucca Ghats (steps to the lake) are elevated and block the view. Only the 'Alha ki Baithak' – the ruined baradari – is visible from the Regulated Area because its height is much higher than the rest of the Protected Site.

From the Northern direction, the Protected Site is visible from the open land, terraces of residential buildings and the boys' hostel of the Government Polytechnic Campus.

From the Western direction, the Protected Site is visible from the cultivated lands and terraces of residential buildings.

From the Southern direction, the Protected Site is visible from the hillock.

6.4 Land-use to be identified:

The identified land use on the surrounding site is predominantly agricultural, religious, public and semi-public. A few residential zones are also identified in the North-East, North-West and South-East.

6.5 Archaeological Heritage Remains other than Protected Site:

There are several monuments in the vicinity of Kirat Sagar Lake, so possibility of finding archaeological remains cannot be ruled out.

6.6 Cultural landscapes:

The Kirat Sagar Lake was constructed to meet the water needs of the community. Additionally, the religious structures on its banks are functional, where people perform religious rituals.

Every year, a large number of people assemble at the Eastern embankment of this site for the renowned Kajri Mela, which is held annually to remember the battle fought in 1182 C.E. between Prithviraj Chauhan and Chandela King Parmal.

6.7 Significant natural landscapes that form part of cultural landscape and help in protecting monuments/sites from environmental pollution:

The presence of large trees such as Mango, Peepal and Banyan along the banks acts as a natural barrier, filtering pollutants and improving air quality, thereby protecting nearby sites from environmental damage. The religious structures benefit from the greenery, which reduces exposure to dust and soil erosion. The small green hills to the South and West help regulate the local microclimate, mitigate soil erosion and protect the site from potential flooding. Additionally, the extensive cultivated lands to the West contribute to soil conservation and water retention, further safeguarding the site from environmental degradation.

6.8 Usage of open space and constructions:

Members of the local community use the pucca Ghats (steps to the lake) and the banks on the East of the Protected Site for recreational and religious activities. A few religious structures on the banks serve the purpose for religious rituals and ceremonies. The Ghats (steps to the lake) also have a number of Peepal and Mango trees, providing ample shade under which many students come to study. The North-Eastern side of the lake serves as a washing point. The land in the North and West is utilized for farming. The construction is primarily used for residential, public and semi-public purposes.

6.9 Traditional, historical and cultural activities:

Religious structures within the Prohibited and Regulated Area of the Protected Site, hosts rituals and cultural events. The renowned Kajri Mela held annually, stands out as a major cultural celebration.

6.10 Skyline as visible from the Protected Site and from Regulated Areas:

The Eastern skyline visible from the Protected Site is a mix of pucca Ghats (steps to the lake), trees and religious structures. Towards North, the skyline visible from the Protected Site is a mix of dense vegetation, hillocks, mounds, religious structures, boy's hostel building of Government polytechnic and residential buildings. In the Western direction, the skyline visible from the Protected Site is a mix of dense vegetation, cultivated lands, mounds, BSNL tower and residential buildings. In Southern, the skyline visible from the Protected Site is a mix of dense vegetation, hillocks and mounds and religious structures.

As a water body, the Protected Site is not a part of any skyline.

6.11 Traditional Architecture:

In the vicinity of the Protected Site, there are several residential buildings constructed with· mud and featuring country tile roofing. The temples situated near the Ghats (banks) display the Malwa architectural style. Additionally, there are a few dilapidated Lakhori brick structures near the Protected Site.

6.12 Developmental plan, as available, by the local authorities:

There is no development plan prepared or made available in the public domain by any of the current local authorities.

6.13 Building related parameters:

The Protected Site - The Great Lake of Kirat Sagar is located in close vicinity of other Protected Site namely The Lake of Madan Sagar, about 3 miles in circuit, constructed 1129-65 A.D. Hence, the Regulated Area of The Great Lake of Kirat Sagar overlaps with the Regulated Area of the above-mentioned Protected Site. In the event of a site of construction simultaneously falling in the Prohibited Area of one Protected Site and the Regulated Area of another Protected Site, the site of construction shall be deemed to be falling in the Prohibited Area alone and the building-related parameter shall be applicable accordingly. Further, if a site of construction falls in the Regulated Area of two separate Protected Sites, the likely adverse impact on account of the proposed construction on the Protected Site which is closer to the site of construction, shall be given precedence.

6.13.1 Repair and Renovation (In Prohibited and Regulated Area):

Internal changes and adaptive reuse may be generally permitted. However, external changes shall be subject to detailed scrutiny by the Competent Authority. Such Changes which include retrofitting/ renovation may be permitted when the building is structurally weak or unsafe or when it has been adversely impacted by any natural calamity and renovation is absolutely necessary. Original building vocabulary and layout, along with built-open relationships are to be adhered to. General repair and upkeep of buildings will be permissible, subject to permission from the Competent Authority.

The repair and renovation of structures should be sympathetic and congruous with the character of the Protected Site and its surrounding areas. New cladding materials like Aluminium Composite Panels (ACP), high-pressure laminates (HPL), laminates, tiling or glazing should be discouraged. Use of locally available building material should be encouraged in carrying out repair and renovation works.

6.13.2 Reconstruction:

Reconstruction is defined in Section 2(k) of Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act, 1958, as amended. Permission for reconstruction in Regulated Area is accorded as per Section 20 C (2) of the AMASR Act, 1958, as amended, and Rule 6 (IV) and Rule 7 AMASR (Framing of heritage Bye-laws and other functions of the Competent Authority) Rules, 2011. In case of any type of building or structure located in the Prohibited or Regulated Area of the Protected Monument or Protected Site, collapsed or damaged and found beyond repair due to natural calamities, the permission for reconstruction is accorded as per Rule 16 of AMASR (Framing of heritage Bye-laws and other functions of the Competent

Authority) Rules, 2011. Reconstruction of building or structure damaged due to natural calamity shall be permissible only to the extent it is damaged. The new structure or building as a replacement to the older building in case of reconstruction shall follow the same horizontal and vertical limits as per the pre-existing structure. The use of incongruous materials in the facade such as glazing, metal cladding, Aluminium Composite Panels (ACP), High Pressure Laminates (HPL), tiles, laminates will not be permissible. The new structure should be sympathetic and congruous with the heritage character of the Protected Monuments and its surrounding area.

6.13.3 New Construction:

6.13.3.A Prohibited Area:

As per Section 20A (4) of AMASR Act, 1958, as amended, no new construction including carrying out any public work or project essential to the public or other construction, shall be permitted within the Prohibited Area of the Protected Site.

6.13.3.B Regulated Area:

All the development control norms and building regulations specified in the Development Authority building construction and development sub method 2008, revised in 2016 (clause 1.1.1, 1.1.2, and 1.2.1) defined under the "Uttar Pradesh Municipal Planning and Development Act - 1973" as and when amended shall be applicable. However, the height and other parameters specified in this document shall be applicable in the Regulated Area of the Protected Site.

Constructions that fall under specified exemptions would be permissible on the existing land use of the Regulated Area of the Site. These permissible constructions on agricultural land include constructions of structures for dwellings and ancillary building for the people engaged in the farm or structures for storage of crops, fodder, manure, agricultural tools and other similar facilities.

1. **Height of the new construction on the site (including mumty, parapet, water storage tank, machine room, HVAC unit, solar panel, rain water harvesting system, penthouse structures of terrace garden etc.) or any other services on the roof:**

The maximum height limit for new construction or additions/alteration to existing buildings shall not exceed **10.5 metres** (including mumty, parapet, water storage tank, machine room, HVAC unit, solar panel, rain water harvesting system, penthouse structures of terrace garden etc.) or any other services on the roof.

Construction of the basement to be discouraged as far as feasible.

2. Usage:

(i) Present land use may be retained.

(ii) The area covered by water bodies in the Regulated and Prohibited Area of the Site shall be maintained as existing and should not be changed in any manner.

3. Façade design:

The façade design of new construction should preferably be minimalistic in nature, so that it does not overpower the Protected Site and the overall heritage character of the surrounding area. The façade design should preferably be subtle, plastered and painted in earthy colours (white, grey, beige, brown etc.)

4. Roof design:

(i) The flat roof design should be encouraged.

(ii) Erection of Structures, even of temporary nature, using materials such as aluminium, fibreglass, polycarbonate or similar materials should be discouraged on the roof of the building.

(iii) All services such as large air conditioning units, rooftop water storage tanks or large generator sets placed on the roof to be screened off using screen walls (brick/cement sheets, louvres, jaalis or other such design elements). All of these services should be included in the maximum permissible height.

5. Building material:

Consistency in building materials and colour with the façade of buildings surrounding the site, may be maintained. Modern building materials such as aluminium cladding, glass bricks and any other synthetic tiles or materials should be discouraged for exterior finishes. Traditional building materials such as brick and stone should be used.

6. Colour:

The exterior colour should be of a neutral tone in harmony with the Protected Site such as buff sandstone colour, white, beige and other earthy colours which do not create a harsh contrast with the Protected Site and its immediate surroundings.

7. Other Regulations:

Proposal for construction of any large-scale public infrastructure project like Metro (underground or overhead), foot-over bridges, flyover, multi-level parking or any such project shall be subject to a detailed Heritage Impact Assessment report.

6.14 Visitors facilities and amenities:

Additional visitor facilities and amenities may be considered in the vicinity of the Protected Site as per feasibility.

CHAPTER VII

Site Specific Recommendations

7.1 Site Specific Recommendations:

i. The area covered by Kirat Sagar (ponds or water bodies) must be preserved in its current state and any alterations to its existing use should be discouraged.

ii. LED or digital signs, plastic fiber glass or any other highly reflective synthetic material should not be used for signages in the vicinity of the Protected Site or its immediate surrounding areas.

iii. No advertisements in the form of hoardings, bill-boards and posters should be permitted near the Protected Site especially on the boundaries of the monument.

iv. Use of Eco-Friendly vehicles for movement in the vicinity of the Protected Site may be encouraged to mitigate adverse impact on the Protected Site due to vehicular emissions and vibrations.

v. Construction of green buildings including best practices like rainwater harvesting should be encouraged.

7.2 Other recommendations:

i. Whenever the Master Plan, Zonal Plan, or Development Plan is prepared or amended, it should clearly show all Protected Monuments of national importance and their Prohibited and Regulated Areas.

ii. At present, there is no land use plan/master plan/zoning regulations etc. prepared by the authority. Hence, while preparing of such plans, provisions of this Heritage Bye-Law shall take precedence over local building bye laws, as and when they are prepared.

iii. The area should be declared as Plastic and Polythene free zone.

iv. National Disaster Management Guidelines for Cultural Heritage Sites and Precincts may be referred at https://nidm.gov.in/PDF/pubs/NDMA/20.pdf

अनुलग्नक
ANNEXURES

अनुलग्नक-I

ANNEXURE-I

1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश की संरक्षित, प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों की संरक्षित सीमा

The Protected Boundary of Protected, Prohibited and Regulated Areas of The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 A.D. to 1079 A.D, Malakpura, Tehsil and District – Mahoba, Uttar Pradesh

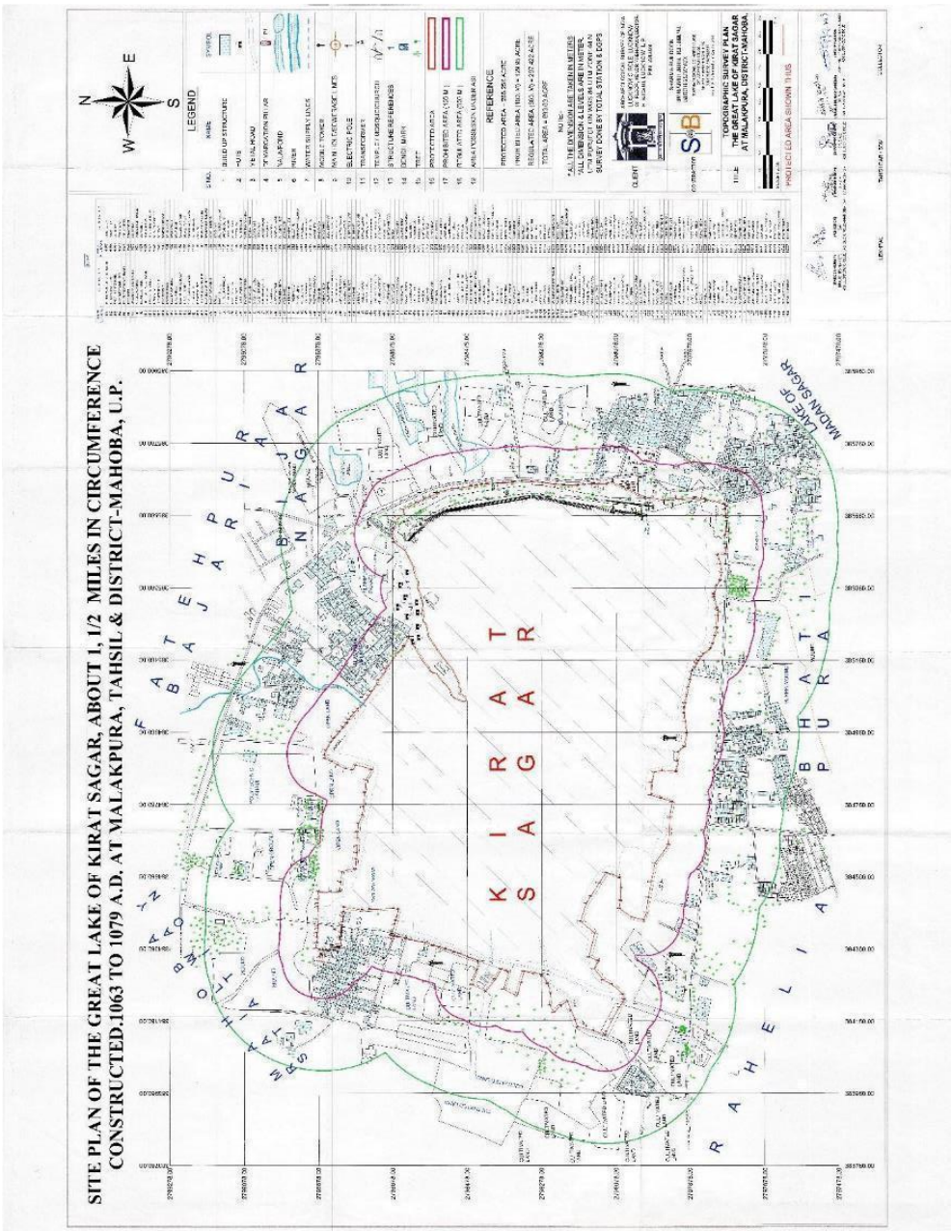

अनुलग्नक-II

ANNEXURE-II

1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश की अधिसूचना

Notification of the The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 A.D. to 1079 A.D, Malakpura, Tehsil and District – Mahoba, Uttar Pradesh

मूल अधिसूचना

Original Notification

PUBLIC WORKS DEPARTMENT.

BUILDINGS AND ROADS BRANCH.

Dated Allahabad, the 27th December, 1920.

No. 1669./1133M—In exercise of the powers conferred by section 3, sub-section (3) of the Ancient Monuments Preservation Act (VII of 1904) His Honour the Lieutenant-Governor is hereby pleased to confirm this department notification no. 1465M/1133., dated the 25th November, 1920, published at pages 1911 to 1924 of Part I of the *United Provinces Gazette*, dated the 27th November, 1920, relating to the undermentioned monuments:—

Serial no.	Name and description of monument.	District.	Locality.
1	An old temple of Mahasu or Mahadeva: the shrine is built on a Tibetan model.	Dehra Dun ..	Bankauli near Madha.
2	Famous temple sacred to Mahasu	Do. ..	Hanol or Onol, about 15 miles N.-E. from Madha.
3	An old Hindu temple said to have been built by Sankaracharya about 675 A.D.	Do. ..	Rikhi Kesh 25 miles east from Dehra on the Ganges.
4	Old town, 17' below the surface of the country discovered by Captain Cautley in 1834.	Do. ..	Bahat on the Eastern Jumna canal in tahsil Saharanpur, 18 miles north from headquarters.
5	Several large tumuli (kheras) in and about Ahar	Bulandshahr ..	Ahar in tahsil Anupshahr, on right bank of the Ganges, 21 miles to the N.-W. of the town of Bulandshahr.
6	Remains of a brick fort and a temple, existing below the remains of the old manufactory of the East India Company..	Do. ..	Anupshahar.
7	Ruins of an old temple known as Chandrani-ka-mandir.	Do ..	Aurangabad Chandok, an old village in pargana Shikarpur
8	A large mound to the west of modern town. The mound is popularly known under the name of Moti Bazar.	Do. ..	Bulandshahr.
9	Balai Kot or upper fort at Bulandshahr, is pointed out as the remains of buildings erected by Harnadatta, who ruled at the time of Mahmud of Ghazni's invasion.	Do. ..	Do.
10	A very large and lofty mound with a small village perched on the east-north eastern side of it.	Do. ..	Indor, on the right bank of the eastern branch of the Choya nadi, half a mile to the W.N.-W. from the Anupshahr and Kool road and about eight miles to the S. S.-W. from Anupshahr.
11	Kundanpura mound or the great temple Mound, situated about 700 feet to the N.-W. from no. 12. Measures nearly 600 in circumference.	Do.	Ditto.
12	Ahirpura mound or lesser temple mound, situated about 225 feet to the south from the Kundanpura mound. This mound measured about 125' by 110'.	Do. ..	Ditto.
13	Vaidyapura mounds, including four mounds, situated to the north side of the Indor Khera across the Choya nadi.	Do. ..	Ditto.
14	Khera or mound near the city called Taipat-nagari or Myayi-Khera.	Do. ..	Shikarpur in tahsil Baran, 19 miles S.-E. of Bulandshahr.
15	A little mound to the south of the town, called the Lakha-mandap is supposed to be the scene of the attempt to burn the Pandavas.	Meerut ..	Barnawa, 19 miles N.-W. from Meerut in tahsil Sardhana.
16	The mounds known as Ulta-khera and the mound of Raghunathji.	Do. ..	Hastinapur.

Serial no.	Name and description of monument.	District.	Locality.
158	An exquisite Torana or gateway half-ruined. It is situated outside the compound of modern Jain temple	Jhansi ..	Sironi Khurd, small village in pargana Bansi of tahsil Lalitpur, 12 miles N.-W. of headquarters.
159	Remains of a large Vishnu temple round a *Caoli*, on the opposite bank of the Kherar river.	Do. ..	Satgato, a little to the east of Sironi Khurd.
159a	A small temple, with three figures of Vishnu in niches outside, and facing west.	Do. ..	Surahad, an old town on the high road between Lalitpur and Chanderi.
160	A Sanskrit inscription of Samvat 1672 on the Chaukhanda of rupan Guru.	Jalaun ..	Akbarpur or Ataura, 8 miles S.-E. of Kalpi.
161	One dome on 12 pillars called Bara-khamba, traditionally ascribed to the commanders of Prithviraja.	Do. ..	Kunch tahsil, 16 miles S.-W. of Jalaun.
162	An image inscribed Samvat 1263 lying under a nim tree in the village.	Hamirpur ..	Badanpur, 2 miles to the W. of Hamirpur.
163	The Brahm Tal, an extensive tank whose embankment has the form of a segment. On this embankment is a ruined Chandella temple, and in the middle of the lake the ruins of a *baithak*.	Do. ..	Kabraia, town in tahsil Mahoba, 48 miles south of Hamirpur.
164	The Chakariya Dai, a carving of a woman with a child in her arms.	Do. ..	Ditto.
165	The ruins of a palace on a hill	Do. ..	Kulpahar.
166	A large Chandella tank on the embankment of which stands a large ruined temple of the earliest Chandella type.	Do. ..	Rawatpur, a village about 4 miles S.-E. of Kulpahar.
167	A smaller temple, of which the dome has fallen, about 300 yards distant from no. 166.	Do.	Ditto.
168	Ruins of two granite temples at Charna and a large tank at Patkari.	Do. ..	Charna and Patkari villages, 6 miles to the W. of Kulpahar.
169	Two ruined granite temples	Do. ..	Luhari.
170	A fine old temple sacred to Vishnu	Do. ..	Saheb Maheb.
171	An old well with an inscription of Samvat 755 ..	Do. ..	Paraobari, about 13 miles S.-W. or Kulpahar.
172	Ruins of a large granite temple, more than double the size of that of Makarbai, and situated 1 mile to the north of that village.	Do. ..	Makarbai, small village in tahsil Mahoba, 10 miles N.-E. of the tahsil.
173	Middle-sized temple of which the dome, has fallen and the embankment of an almost dry tank.	Do. ..	Barsi Talao, about 4 miles E. of Makarbai.
174	A large low-roofed hall in a ruinous condition ..	Do. ..	Ditto.
175	The great lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 to 1097 A.D.	Do. ..	Mahoba.
176	The lake of Madansagar, about 3 miles in circuit, constructed 1129-65 A.D.	Do. ..	Do.
177	The lake of Vijaya Sagar constructed by Vijayapala-deva (1040-50 A.D.)	Do. ..	Do.
178	Five life-sized elephant statues which belonged to the ruined granite temple of the Chandella princes, situated on a rocky island a few hundred feet to the north of Kakra Marh in the Madan Sagar lake.	Do. ..	Do.
179	The palace of Raja Paramar dideva or Parmal, situated on the top of the hill fort.	Do. ..	Do.
180	A small stone pillar called Alha Ki-lat, 9½′ high, standing in the south-east quarter of the city called Dariba.	Do. ..	Do.
181	Twenty-four rock-hewn images of the Tirthankara with inscriptions, dated S. 1206 on a hillock on the S.-E. bank of the Madan Sagar.	Do. ..	Do.
182	A broken image of Parsvanatha, inscribed Samvat 1229 under a pipal tree on the Banda road outside the village.	Do. ..	Maudah, tahsil 20 miles S. of Hamirpur.

अधिसूचना की टाइप की गई प्रति
Typed copy of Notification

PUBLIC WORKS DEPARTMENT

BUILDINGS AND ROADS BRANCH

Dated Allahabad, the 27th December, 1920.

No. 1669/1133M- In exercise of the powers conferred by section 3, sub-section (3) of the Ancient Monuments Preservation Act (VII of 1904) His Honour the Lieutenant Governor is hereby pleased to confirm this department notification no. 1465m/1133., dated the 25th November, 1920, published at pages 1911 to 1924 of Part I of the *United Provinces Gazettee*, dated the 27th November, 1920, relating to the undermentioned monuments :-

Serial no.	Name and description of monument	District	Locality
175	The Great lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 to 1097 A.D.	Do.	Mahoba

अनुलग्नक-III
ANNEXURE-III

1063 ई. से 1079 ई. के बीच निर्मित, परिधि में लगभग 1½ मील की कीरत सागर की विशाल झील, मलकपुरा, तहसील और जिला - महोबा, उत्तर प्रदेश की रूपरेखा योजना

Contour Plan of The Great Lake of Kirat Sagar, about 1½ miles in circumference constructed 1063 A.D. to 1079 A.D, Malakpura, Tehsil and District – Mahoba, Uttar Pradesh

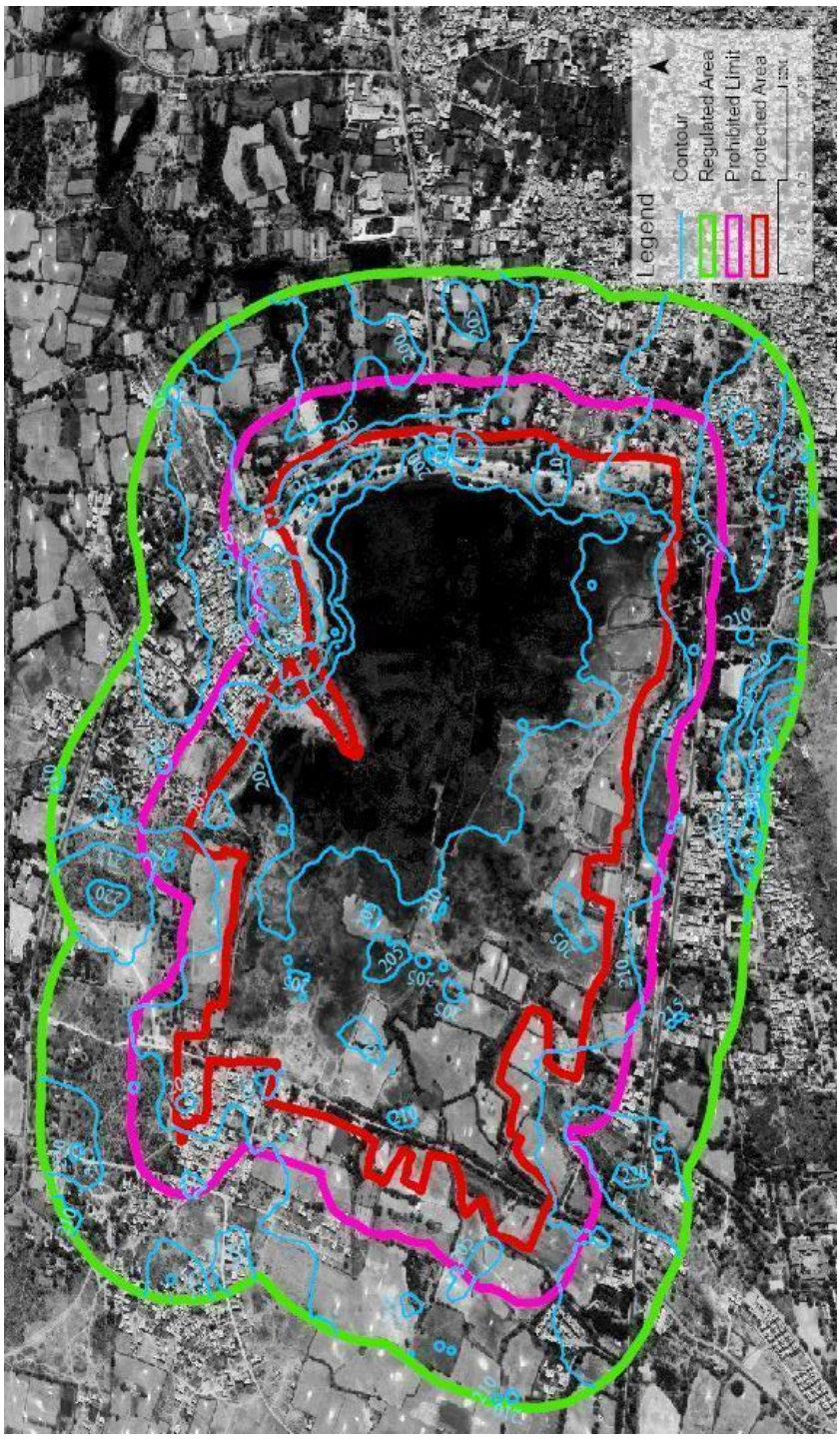

अनुलग्नक-IV

ANNEXURE-IV

संरक्षित स्थल और उसके आस-पास के चित्र
Images of the Protected Site and its Surroundings

चित्र 1: दक्षिण-पूर्वी दिशा में संरक्षित स्थल (कीरत-द्वार) का प्रवेश द्वार

Image 1: Entrance Gate of the Protected Site (Kirat-Dwar) at South-Eastern direction

चित्र 2: पूर्वी दिशा में पहुंच मार्ग का दृश्य

Image 2: View of approach road in Eastern direction

चित्र 3: दक्षिण-पूर्वी दिशा में खंडहर हो चुकी बारादरी (आल्हा की बैठक) का दृश्य

Image 3: View of the ruined baradari (Alha ki Baithak) in South-Eastern direction

चित्र 4: पूर्व दिशा में सार्वजनिक सुविधाएं

Image 4: Public amenities in East direction

चित्र 5: पूर्वी दिशा में संरक्षित स्थल, मंदिर, तटबंध और चारदीवारी का दृश्य

Image 5: View of the Protected Site, temple, banks and boundary wall in Eastern direction

चित्र 6: उत्तरी दिशा में संरक्षित स्थल और पहाड़ी का दृश्य

Image 6: View of the Protected Site and the hillock in the Northern direction

चित्र 7: पूर्वी दिशा में मुस्करा-महोबा-चरखारी मार्ग का दृश्य

Image 7: View of the Muskara-Mahoba-Charkhari Marg in Eastern direction

चित्र 8: तटबंध पर मंदिर और पेड़ के आसपास बैठने की जगह का दृश्य

Image 8: View of the temple and seating around tree at the banks

चित्र 9: उत्तरी तटबंध का दृश्य

Image 9: View of the Northern embankment

चित्र 10: पूर्वी दिशा में सार्वजनिक शौचालय और अन्य सुविधाएं

Image 10: Public washroom and other facilities in Eastern direction

चित्र 11: दक्षिण-पूर्वी दिशा में स्कूल भवन और खुला स्थान

Image 11: School building and the open space in the South-Eastern direction

चित्र 12: दक्षिण-पूर्वी दिशा में बस्ती

Image 12: Settlement in the South-Eastern direction

चित्र 13: उत्तरी दिशा में आलमपुरा गांव की बस्ती

Image 13: Settlement of Alampura village in Northern direction

चित्र 14: पश्चिमी दिशा में घने पेड पौधे

Image 14: Dense vegetation in Western direction

चित्र 15: उत्तर-पश्चिमी दिशा में राजकीय पॉलिटेक्निक परिसर

Image 15: Government Polytechnic Campus in North-Western direction

चित्र 16: उत्तर-पश्चिमी दिशा में यशोदा नगर की बस्ती

Image 16: Settlement of Yashoda Nagar in North-Western direction

चित्र 17: संरक्षित स्थल की पश्चिमी दिशा में सड़क

Image 17: Road in the Western direction of the Protected Site

चित्र 18: संरक्षित स्थल की पश्चिमी दिशा में जोती गई भूमि

Image 18: Cultivated land in the Western direction of the Protected Site

चित्र 19: दक्षिण-पूर्वी दिशा में बस्ती

Image 19: Settlement in the South-Eastern direction

चित्र 20: दक्षिण-पूर्वी दिशा में क्राइस्ट चर्च

Image 20: Christ Church in the South-Eastern direction

चित्र 21: उत्तर-पश्चिमी दिशा में यशोदा नगर का दृश्य

Image 21: View of Yashoda Nagar North-Western direction

चित्र 22: उत्तर दिशा में आलमपुरा गांव का दृश्य

Image 22: View of Alampura Village North direction

चित्र 23: पूर्व दिशा में घाट के किनारे खाने पीने की दुकान का दृश्य

Image 23: View of vending zone alongside the Ghats-East direction

चित्र 24: बीएसएनएल कार्यालय का दृश्य (दक्षिण-पश्चिमी दिशा)

Image 24: View of BSNL office (South-Western direction)